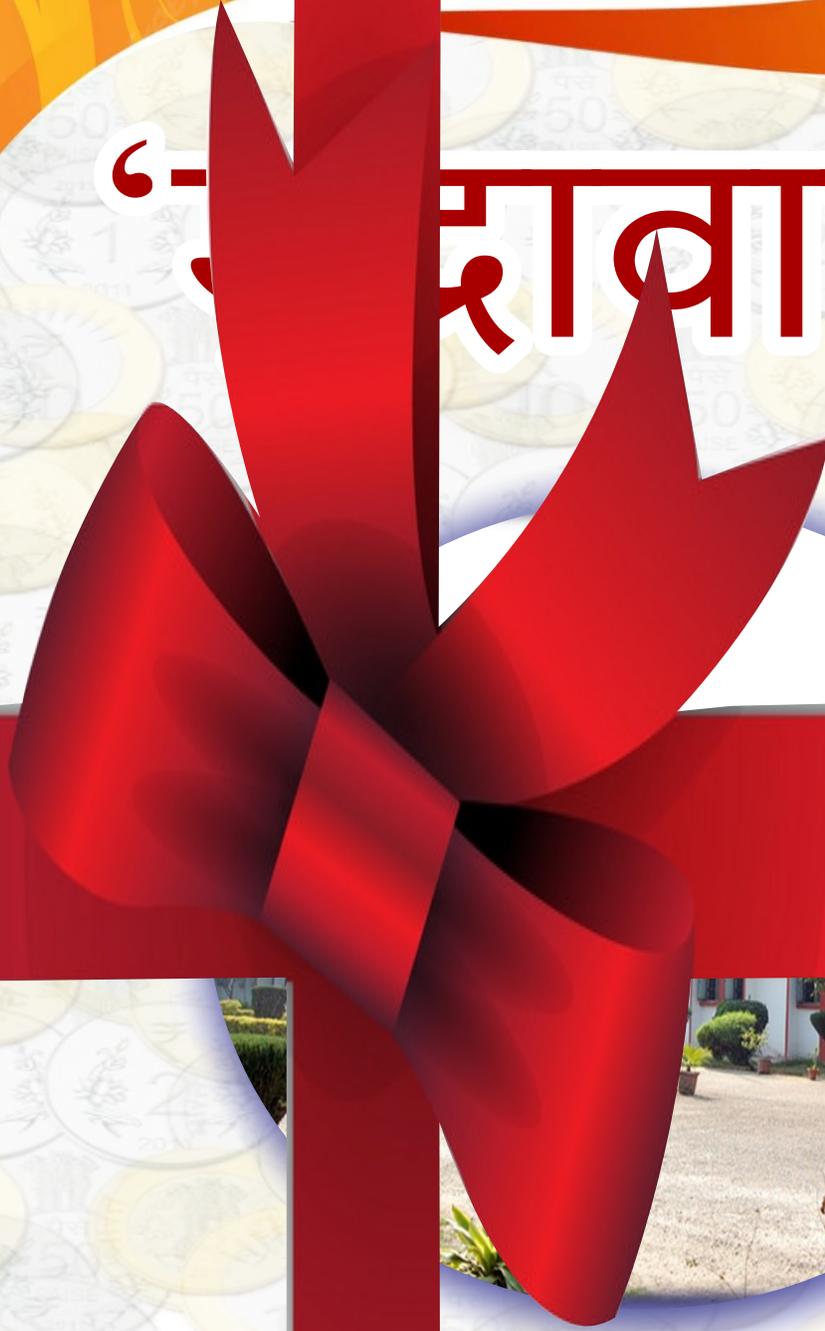




# ‘संसाधनी’



2022  
छठा अंक

**भारत सरकार तकसाल, नोएडा**  
(भारत प्रतिष्ठान तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)  
सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)  
आईएसओ: 2015,14001:2015 (प्रमाणित), 45001:2018



# ‘मुद्रावाणी’



2022  
छठा अंक

**भारत सरकार टकसाल, नोएडा**  
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)  
डी-2, सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)  
आईएसओ: 9001:2015, 14001:2015 (प्रमाणित), 45001:2018

# क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार





## राजभाषा पत्रिका

संरक्षक:

श्री सत्य प्रकाश वर्मा,  
मुख्य महाप्रबंधक

उप संरक्षक:

श्री अमित कुमार,  
संयुक्त महाप्रबंधक  
(त.प्र.)

प्रकाशन समिति

श्रीमती सीमा रानी,  
उप महाप्रबंधक  
(वि. एवं ले.)

श्री दीपक माथुर,  
उप महाप्रबंधक  
(मा. सं.)

श्री अतुल सिंह तोमर,  
उप महाप्रबंधक  
(मा. सं.)



क्र.सं.	पाठ	पृष्ठ सं.
1	संदेश	02-05
2	संरक्षक की कलम से	06
3	संपादकीय	07
4	राजभाषा नीति एवं निर्देश- मुख्यांश	08-10
5	करें योग रहें निरोग	11-12
6	पिता - भाव	12
7	महत्वपूर्ण द्विभाषी वाक्यांश	13
8	जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा एवं स्वांग	14-15
9	बढ़ता शहरी प्रदूषण, होता प्राकृतिक दोहन	16-17
10	संघर्ष ही सफलता की कुंजी	18-19
11	अकबर, बीरबल तथा तीन गुड़िया	20
12	गर्मी ने किया हाल बुरा	21
13	ऑनलाइन शिक्षा का महत्व	22-23
14	देश भक्ति कविता	24
15	मानसिक शांति	25-26
16	अमीरी और गरीबी	27
17	आलसी मधुमक्खी	28
18	मैं बोझ नहीं हूँ	29
19	चलना हमारा काम	30
20	कथा-सच्चा धन	31
21	आधुनिक सत्य	32
22	तैनाली की मुनादी	33
23	जीवन सत्य है 'संघर्ष'	34
24	शायरी संकलन	35
25	सकारात्मक सोच की ताकत	36
26	गतिविधियां	37-41

संपादक:

श्री नरेश कुमार, उप प्रबंधक (रा.भा.)

संकलन एवं डिजाइन: श्री आशीष शर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

"पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।  
रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।"



तृप्ति पी. घोष

TRIPTI P. GHOSH

अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक

Charimen & Managing Director

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड

Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.

मिनीरल श्रेणी- I, सी.पी.एस.ई.

Miniratna Category-I, C.P.S.E.

(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)

(Wholly owned by Govt. of India)



## “संदेश”

यह अत्यंत ही प्रशंसनीय है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा की राजभाषा पत्रिका ‘मुद्रावाणी’ के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। संगठन के काम-काज व विभिन्न गतिविधियों के प्रचार-प्रसार के लिए उसकी पत्रिका सर्वदा सबसे सुगम व प्रभावशाली माध्यम होती है।

व्यवसाय की वर्तमान चुनौतियों के अनुरूप हमारा लक्ष्य इकाइयों में व्यवसाय के वैविध्य की दिशा में समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ना है। इसके लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं तथा अपने कर्मठ कार्यबल की प्रतिभा के इष्टतम सदुपयोग की योजना में हैं।

साथ ही भारत सरकार टकसाल, नोएडा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन की ओर निरंतर अग्रसर है। इकाई द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्ति इस तथ्य का प्रमाण है कि यहां राजभाषा का प्रयोग संविधान की मूल भावना के अनुरूप ही किया जा रहा है।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अपील करती हूँ कि अपने कार्यालय के कार्य के प्रति समर्पित रहते हुए अपना कार्य भरपूर ऊर्जा, उत्साह तथा संकल्प के साथ निष्पादित करें। हमें पूरी दृढ़ता एवं प्रतिबद्धता के साथ अपने मूल कार्य के साथ-साथ संघ की राजभाषा नीति का अक्षरशः अनुपालन करना है।

मुद्रावाणी के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

तृप्ति घोष

(तृप्ति पात्रा घोष)



**सुनील कुमार सिन्हा**  
**SUNIL KUMAR SINHA**  
**निदेशक (मानव संसाधन)**

**Director (Human Resource)**

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड  
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.  
मिनीरल श्रेणी- I, सी.पी.एस.ई.  
Miniratna Category-I, C.P.S.E.  
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)  
(Wholly owned by Govt. of India)



## “संदेश”

यह आमोद का अवसर है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका ‘मुद्रावाणी’ के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संगठन की गृह पत्रिका का मुख्य उद्देश्य इकाई के विभिन्न क्रियाकलापों की सूचना सहित उसके अधिकारियों व कार्मिकों में लेखन कला के प्रति रूचि व रूझान व उसके प्रति संचेतना जागृत करना होता है।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा द्वारा गत कई वर्षों से राजभाषा के क्षेत्र में लगातर शानदार प्रदर्शन किया जा रहा है। इकाई द्वारा सदैव ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग व संवर्धन हेतु जारी निर्देशों तथा अनुदेशों का पूर्णतः अनुपालन किया जा रहा है। यह इसी कर्मण्यता का ही सुपरिणाम है कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा को राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विगत कई वर्षों से क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर क्रमशः नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा, भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं एसपीएमसीआईएल की ओर से राजभाषा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि एसपीएमसीआईएल प्रबंधन अपनी इकाइयों के व्यवसाय के विविधीकरण के लिए निरंतर प्रयासरत है। टकसाल नोएडा में विभिन्न स्तर पर नई योजनाएं उन्नत प्रक्रिया में हैं। मैं इनके सफल होने की अग्रिम शुभकामनाएं देता हूँ।

मैं पुनः आप सभी को इन पुरस्कारों के लिए बधाई देता हूँ तथा इकाई की गृह पत्रिका ‘मुद्रावाणी’ के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

(सुनील कुमार सिन्हा)



**अजय अग्रवाल**  
**AJAY AGARWAL**  
**निदेशक (वित्त)**

**Director (Finance)**

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड  
Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.  
मिनीरल श्रेणी-1, सी.पी.एस.ई.  
Miniratna Category-I, C.P.S.E.  
(भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन)  
(Wholly owned by Govt. of India)



## “संदेश”

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका ‘मुद्रावाणी’ के छठे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय की गृह पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन की उत्कृष्टता का एक सफल उदाहरण है।

राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन में गृह पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इन पत्रिकाओं में न केवल कार्यालय की अद्यतित गतिविधियां समाहित होती हैं, अपितु कर्मचारियों के ज्ञान-विज्ञान व भावात्मक अभिव्यक्ति का भी समावेश होता है। यह कर्मचारियों की सकल सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। पत्रिका में निहित विषय विविधता से पाठकों का ज्ञानार्जन होता है, जिसे हम न केवल अपने जीवन में उतार सकते हैं, अपितु उससे प्रेरित होकर जीवन में एक नई दिशा की ओर अग्रसर होते हैं।

टकसाल नोएडा द्वारा सिक्कों के उत्पादन के मूल कार्य के साथ-साथ वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए अपने व्यवसाय में वैविध्य पर जोर दिया गया है, जिसके लिए मैं अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

साथ ही मेरा विश्वास है कि राजभाषा कार्यान्वयन के महत्वपूर्ण बिंदुओं के रूप में गृह पत्रिका ‘मुद्रावाणी’ का यह संस्करण भी इकाई के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा के साथ-साथ विचारात्मक अभिव्यक्ति का संगम सिद्ध होगा। मैं पत्रिका से जुड़े सभी कर्मियों को इसके सफल प्रकाशन की शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

अजय अग्रवाल

**(अजय अग्रवाल)**  
**निदेशक (वित्त)**



विनय कुमार सिंह, भा.रा.से.

**Vinay K. Singh, I.R.S.**

मुख्य सतर्कता अधिकारी  
Chief Vigilance Officer



सत्यमेव जयते

भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड

(वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

**Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.**

(Under Ministry of Finance, Govt. of India)

संदेश



भारतीय संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत हिंदी की एक अलग ही महिमा है जिस प्रकार हिन्दी ने समूचे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है उसी तरह संगठन के कार्यकलापों में विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य संवाद स्थापित करने में अहम भूमिका निभाती है।

कार्यालय की गृह पत्रिका में कर्मचारियों की अभिव्यक्ति तथा अनुभव की झलक के साथ-साथ कार्यालय की विविध गतिविधियों की जानकारी और बोधता का भी समावेश रहता है। भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के छठवें अंक का प्रकाशन इसी दिशा में एक सर्वोत्कृष्ट प्रयास है। एक पत्रिक केवल कुछ लेखों का संकलन नहीं होती, यह संगठन/व्यक्ति विशेष की नूतन जानकारियों और निहित लेखों के लेखकों की तनम्यता से लिखी आत्मवाणी का एक संग्रह होता है, जिससे वह जन-जन तक पहुँचाकर जनमानस की निस्वार्थ सेवा करता है।

भारत सरकार टकसाल, नोएडा की गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' इसी क्रम में किया जा रहा एक सकारात्मक प्रयास है। मैं आशा करता हूँ कि मुद्रावाणी में संग्रहीत लेख न केवल पाठकों को प्रभावित करेंगे अपितु उनमें नवचेतना का सूत्रपात भी करेंगे।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और इसमें योगदान करने वाले सभी का साधुवाद करता हूँ।

*Vinay*

(विनय कुमार सिंह)  
मुख्य सतर्कता अधिकारी

16 वीं मंजिल, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001  
16th Floor, Jawahar Vyapar Bhawan, Janpath, New Delhi-110 001  
फोन / Tel. : 91-11-43582260 फैक्स / Fax : 91-11-43582202, ई-मेल / E-mail : cvo@spmcil.com  
वेब / Web : www.spmcil.com  
CIN : U22213DL2006GOI144763



**सत्य प्रकाश वर्मा**  
**SATYA PRAKASH VARMA**  
**मुख्य महाप्रबंधक**

**Chief General Manager**

भारत सरकार टकसाल, नोएडा

India Government Mint, Noida

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

Security Printing and Minting Corporation of India Ltd.

डी-2, सेक्टर-1, नोएडा/ D-2, Sector-1, Noida - 201301



## संरक्षक की कलम से



भारत सरकार टकसाल, नोएडा आजादी के पश्चात स्थापित पहली टकसाल है। यह टकसाल कालांतर से लेकर अब तक भारत की मौद्रिक आकांक्षाओं को पूर्ण करती आ रही है।

व्यवसाय की वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप, भारत सरकार टकसाल, नोएडा ने एसपीएमसीआईएल के सर्वोच्च प्रबंधन के निर्देशन में अपने कार्य में विविधता लाने के उद्देश्य से बाजार में व्यवसाय के अन्य उपलब्ध स्रोतों की ओर लक्ष्य निर्धारित किए हैं। मुझे आशा है कि हम शीघ्र ही अपने व्यवसाय को नया स्वरूप देकर टकसाल, नोएडा की अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप प्रदर्शन करने में सफल होंगे। आजादी के अमृत महोत्सव काल में देश में चारों ओर उत्साह एवं जोश का वातावरण है। यह जोश टकसाल नोएडा के विविध क्रियाकलापों में भी कार्यान्वित करने की मेरी अपेक्षा है।

इकाई के राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में मुझे यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि टकसाल नोएडा ने गत कई वर्षों से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। टकसाल को हाल ही में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से दिनांक 26.11.2021 को वर्ष 2019-20 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

मैं इस उपलब्धि का श्रेय टकसाल नोएडा की संपूर्ण टीम को देता हूँ तथा इस अवसर पर गौरवान्वित महसूस करते हुए गृह पत्रिका 'मुद्रावाणी' के छठे अंक के सफल प्रकाशन की शुभकामाएं देता हूँ।

(सत्य प्रकाश वर्मा)

**(सत्य प्रकाश वर्मा)**  
**मुख्य महाप्रबंधक**

## संपादकीय



सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग उतरोत्तर बढ़ रहा है किंतु अभी भी काम अंग्रेजी में हो रहा है। संघ की राजभाषा नीति का मूल उद्देश्य प्रशासनिक कार्य में हिंदी को मूल रूप से प्रयोग करना है, जिससे सरकार के सभी प्रकार के निर्णयों की जानकारी देश की आम जनता तक सुगमता से पहुंचाई जा सके। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जन साधारण की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए राजभाषा अधिकारी को कार्यालय के प्रत्येक क्षेत्र की कार्यशैली की जानकारी होना अनिवार्य है। संगठन की छोटी से छोटी गतिविधि/निर्णय का असर उसकी बाजारीय साख को प्रभावित करता है। उसके कर्मचारियों की कौशलता को प्रदर्शित करता है। अतः सभी प्रकार की जानकारी/विवरण में शब्दों का उपयुक्त चयन करने की दोहरी जिम्मेदारी राजभाषा अधिकारी की बनती है।

संगठन की वेबसाइट से लेकर प्रत्येक उत्पाद के विवरण, विज्ञापन, सूचना तथा निविदा प्रपत्र एवं पत्रिका प्रकाशन इत्यादि में प्रयुक्त शब्दों के चयन में विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। पाठक वर्ग इससे संगठन के अधिकारियों के ज्ञान, क्षमता तथा कौशलता का आकलन करता है। मुद्रावाणी में इन्हीं तथ्यों पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया है तथापि पाठक वर्ग के सुझाव सादर स्वीकार्य हैं।

(नरेश कुमार)  
उप प्रबंधक (रा.भा.)

## राजभाषा नीति एवं निर्देश- मुख्यांश

भारत एक बहु भाषा-भाषी देश है। यहां विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। आजादी के पूर्व, ब्रिटिश शासनकाल के दौरान राज-काज की भाषा के रूप में अंग्रेजी का ही प्रयोग किया जाता था। परंतु वर्ष 1947 में स्वाधीनता के पश्चात, हमारे सम्मुख अनेक समस्याएं खड़ी थी, जिनमें में एक थी देश के संचालन व राज-काज में प्रयोग होने वाली भाषा का चयन। अलग-अलग भाषाओं के उपयोगकर्ताओं को यह अपेक्षा थी कि उनकी भाषा राज-काज की भाषा अर्थात राजभाषा बने। अनेक विवादों व संघर्षों के बाद संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को एक मत होकर हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तथा राजभाषा संबंधी सांविधिक उपबंध किए गए हैं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु उससे संबंधित कुछ संवैधानिक अंश निम्नलिखित हैं, जो केवल राजभाषा सेवियों को ही नहीं अपितु समस्त हिंदी प्रेमियों का ज्ञानवर्धन करेंगे:

### भाग- 5

- **अनुच्छेद 120** संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में है।

### भाग- 6

- **अनुच्छेद 210** राज्यों के विधान-मंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा के संबंध में है।

### भाग -17

- **संविधान का अनुच्छेद 343 (1)** संघ की राजभाषा हिंदी, लिपि देवनागरी, अंकों का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय होगा।
- **संविधान अनुच्छेद 343(2)** के अनुसार संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की अवधि तक हिंदी के साथ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग।
- **संविधान का अनुच्छेद 343(3)** में 26 जनवरी, 1965 के बाद भी सरकारी कार्य में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने हेतु अधिनियम संरचना का प्रावधान है।
- **संविधान का अनुच्छेद 344** में राजभाषा आयोग और संसद की समिति के गठन का प्रावधान है।
- **संविधान के अनुच्छेद 345, 346 व 347** में प्रादेशिक भाषाओं से संबंधित प्रावधानों को निरूपित किया गया है।
- **संवैधानिक अनुच्छेद 348** में उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों तथा अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा का प्रावधान प्रतिपादित किया गया है।
- **संविधान का अनुच्छेद 349** में भाषा से संबंधित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रियाओं को विवेचित किया गया है।
- **संविधान के अनुच्छेद 350 व 351** में हिंदी के विकास संबंधी निर्देश दिए गए हैं।

### राजभाषा अधिनियम, 1963(10 मई 1963 से पारित)

- धारा 3(1) संविधान के प्रारंभ से 15 वर्ष की समाप्ति पर भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा संघ के राजकीय कार्यों तथा संसदीय कार्य के लिए प्रयोग में लाई जाती रहेगी।

- धारा 3 (3) संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रेस विज्ञप्तियों, संसद के समक्ष रखे जाने वाले कागजातों, विधियों, करारों, निविदा प्रारूपों आदि में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाए।
- धारा 4 संसदीय राजभाषा समिति का गठन एवं कर्तव्य

### राजभाषा नियम, 1976

**नियम 1** - राजभाषा नियम तमिलनाडु के सिवाय संपूर्ण भारत में लागू होते हैं

**नियम 3** - नियम 2 के अंतर्गत हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों / संघ राज्य क्षेत्र को तीन क्षेत्रों, यथा- क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

**नियम 4** - पत्रादि की भाषा संबंधी नियम।

**नियम 5**- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं ।

**नियम 8 (1)**- कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पणी या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है। उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

**नियम 8 (4)**- केन्द्र सरकार नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है कि उनमें हिंदी में प्रवीण कर्मचारी टिप्पण और प्रारूप आदि में केवल हिंदी का प्रयोग करें।

**नियम 9**- कोई कर्मचारी हिंदी में प्रवीण तभी माना जाएगा जब उसने मैट्रिक या उसके समतुल्य या उच्च स्तर की कोई परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण की हो, या जिसने स्नातक परीक्षा में अथवा उसके समतुल्य अथवा उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी एक वैकल्पिक विषय से उत्तीर्ण की हो, या निर्धारित प्रारूप में हिंदी में प्रवीणता की घोषणा की हो ।

**नियम 10 (1)**- किसी कर्मचारी को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान तभी माना जाएगा जब उसने मैट्रिक या उसके समतुल्य या उच्च स्तर की कोई परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की हो, या जिसने प्राज्ञ अथवा अन्य निर्धारित निम्नतर परीक्षा उत्तीर्ण की हो, या केन्द्र सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण की हो, या निर्धारित प्रारूप में हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान की घोषणा की हो।

**नियम 10 (4)**- यदि किसी कार्यालय में 80 % या अधिक कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो तो उस कार्यालय का नाम राजपत्र में अधिसूचित किया जाए।

**नियम 11**- केन्द्र सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी नियम- पुस्तकें, संहिताएं और अन्य प्रक्रिया हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किए जाने अपेक्षित हैं। सभी फार्म, रजिस्ट्रों के शीर्षक, नामपट्ट, सूचनापट्ट व लेखन सामग्री की विभिन्न मर्दें आदि हिंदी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में होनी अपेक्षित हैं।

**नियम 12**- केन्द्र सरकार के कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह दायित्व होगा कि वह राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों, इनके उपबन्धों और इनके अधीन जारी निर्देशों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करें तथा इसके लिए उपयुक्त व प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए।

## हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2022-23 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्शन/की बोर्ड पर सीधे टंकण	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	कार्यालयों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%

## करें योग, रहें निरोग



हमारी संस्कृति में हमेशा से ही योग एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय रहा है।

योग के वास्तविक और पारंपरिक वर्गीकरण में उसे कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और क्रिया योग में विभाजित किया गया है।

- कर्म योग-** यह पश्चिमी संस्कृति में 'कार्य के अनुशासन' के रूप में भी जाना जाता है। यह योग के चार महत्वपूर्ण भागों में से एक है। यह निस्वार्थ गतिविधियों और कर्तव्यों के साथ संलग्न हुए बिना तथा फ़ल की चिंता किए बिना कोई काम करना सिखाता है। यह उन लोगों के लिए है जो आध्यात्मिक पथ की खोज करते हैं और परमेश्वर को पाना चाहते हैं। इसका अपने नियमित जीवन में ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वाह संचालन करके भी अभ्यास किया जा सकता है। यह आध्यात्मिक विकास का मार्ग है। असल में कर्म जो हम करते हैं वह क्रिया है और उसका नतीजा इसकी प्रतिक्रिया है। व्यक्ति का जीवन अपने कर्म चक्र द्वारा शासित होता है। अगर उस व्यक्ति के अच्छे विचार, अच्छे कार्य और अच्छी सोच है, तो वह सुखी जीवन जिएगा। वहीं अगर वह व्यक्ति बुरे विचार, बुरे काम और बुरी सोच रखता है, तो वह दुखी और कठिन जीवन जिएगा। आज की दुनिया में ऐसा निस्वार्थ जीवन जीना बहुत मुश्किल है क्योंकि मानव कर्म करने से पहले फ़ल की चिंता करने लगता है। यही कारण है कि हम अधिक तनाव, मानसिक अवसाद और दुख जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। कर्म योग सभी भौतिकवादी रास्तों से छुटकारा दिलाता है और एक खुशहाल और सफल जीवन प्रदान करता है।
- ज्ञान योग-** इसे 'विज्ञान योग' के रूप में भी जाना जाता है। यह किसी व्यक्ति को स्थायी जागरूक और अस्थायी भौतिकवादी दुनिया के बीच अंतर करना सिखाता है। यह पथ 6 मौलिक गुणों - शांति, नियंत्रण, बलिदान, सहिष्णुता, विश्वास और ध्यान केंद्रित करके मन और भावनाओं को स्थिर करना सिखाता है। लक्ष्य को प्राप्त करने और सर्वोत्तम तरीके से इसे एक सक्षम गुरु के मार्गदर्शन में किया जाता है।
- भक्ति योग-** यह दिव्य प्रेम के साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि यह प्रेम और भक्ति के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान का सबसे बड़ा मार्ग है। इस योग में एक व्यक्ति भगवान को सर्वोच्च अभिव्यक्ति और प्यारे अवतार में देखता है। भक्ति योग मन और हृदय की शुद्धि से जुड़ा है और कई मानसिक और शारीरिक योग प्रथाओं द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है। यह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहस देता है।
- क्रिया योग-** यह शारीरिक क्रिया है, जिसमें ध्यान के माध्यम से कई शारीरिक मुद्राएं ऊर्जा और सांस नियंत्रण या प्राणायाम किया जाता है। इसमें शरीर, मन और आत्मा का विकास होता है। क्रिया योग का अभ्यास करके पूरे शरीर को कम समय में सक्रिय किया जा सकता है, जिससे सामान्यता बीमारियों का खतरा कम हो जाता है तथा मनमस्तिष्क सदैव स्वतंत्र रहता है। इससे मस्तिष्क की कामकाजी क्षमता बढ़ जाती है और स्मृति तेज हो जाती है और व्यक्ति जल्दी थकान हुआ महसूस नहीं करता।

## योग की महत्वता-

**आंतरिक शांति** - योग आंतरिक शांति प्राप्त करने और तनाव को कम करने तथा अन्य समस्याओं से लड़ाई में मदद करता है। योग एक व्यक्ति में शांति के स्तर को बढ़ाता है और खुश रहने में मदद करता है।

**स्वास्थ्य** - एक स्वस्थ व्यक्ति एक अस्वस्थ व्यक्ति की तुलना में अधिक काम कर सकता है। आजकल का जीवन बहुत तनावपूर्ण है और हमारे आसपास काफी प्रदूषण भी है। यह कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण है। सिर्फ 10-20 मिनट का योग हर दिन आपको स्वस्थ रहने में मदद कर सकता है। बेहतर स्वास्थ्य का मतलब बेहतर जीवन है।

**ध्यान शक्ति** - यह योग आपके मन को शांत रखने में मदद करता है जिसका मतलब तनाव का कम होना है जिससे आप अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

(दीपक माथुर)

उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)



## पिता - भाव



**पिता** एक उम्मीद है, एक आस है  
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,  
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है  
उसके दिल में दफन कई मर्म हैं।



**पिता** संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार है  
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,  
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है  
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।

**पिता** जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है  
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी है,  
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है  
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।

**पिता** ज़मीर है **पिता** जागीर है  
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,  
कहने को सब ऊपर वाला देता है  
पर खुदा का ही एक रूप **पिता** का शरीर है।

(अमित कुमार जोशी)  
कार्यालय सहायक

## महत्वपूर्ण द्विभाषी वाक्यांश



यदि अनुमोदन करें तो उपर्युक्त सुझाव के अनुसार पत्र भेजा जाएगा।  
If approved, a reply will be sent on the above lines.

आपको इसके द्वारा यह प्राधिकार दिया जाता है।  
You are hereby authorized to

भुगतान के लिए पास करें।  
May be passed for payment.

टैंडर मंगाए गए हैं।  
Tenders have been invited.

अनुशासनिक कार्यवाही प्रारंभ करना।  
Initiation of disciplinary proceeding.

अपेक्षित पेपर नीचे रखे हैं।  
The required papers are placed below.

सेवा स्थिति संतोषप्रद नहीं हैं।  
Service conditions are not satisfactory.

की हैसियत से  
In the capacity of

विलंब न होने दें।  
Delay should be avoided.

अब यह निर्णय लिया गया है।  
It has since been decided.

मुझे निवेदन करने के लिए कहा गया है।  
I am directed to say.

वेतनमान के अधिकतम पर।  
At the maximum of scale.

रिपोर्ट संलग्न प्रोफार्मा में प्रस्तुत की जानी चाहिए।  
The report should be submitted in the proforma enclosed herewith.

भावी मार्गदर्शन के लिए नोट कर लिया।  
Noted for future guidance.

## जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा



जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, एकदम जर्जर बूढ़ा, तब तू क्या थोड़ा मेरे पास रहेगा? मुझे पर थोड़ा धीरज तो रखेगा न? मान ले, तेरे महँगे काँच का बर्तन मेरे हाथ से अचानक गिर जाए या फिर मैं सब्ज़ी की कटोरी उलट दूँ टेबल पर, मैं तब बहुत अच्छे से नहीं देख सकूँगा न! मुझे तू चिल्लाकर डाँटना मत प्लीज़! बूढ़े लोग सब समय खुद को उपेक्षित महसूस करते रहते हैं, तुझे नहीं पता? एक दिन मुझे कान से सुनाई देना बंद हो जाएगा, एक बार मैं मुझे समझ में नहीं आएगा कि तू क्या कह रहा है, लेकिन इसलिए तू मुझे बहरा मत कहना! ज़रूरत पड़े तो कष्ट उठाकर एक बार फिर से वह बात कह देना या फिर लिख ही देना कागज़ पर मुझे माफ़ कर देना मैं तो कुदरत के नियम से बुढ़ा गया हूँ, मैं क्या करूँ बता? और जब मेरे घुटने काँपने लगेंगे, दोनों पैर इस शरीर का वज़न उठाने इनकार कर देंगे, तू थोड़ा-सा धीरज रखकर मुझे उठ खड़ा होने में मदद नहीं करेगा, बोल? जिस तरह तूने मेरे पैरों के पंजों पर खड़ा होकर पहली बार चलना सीखा था, उसी तरह? कभी-कभी टूटे रेकॉर्ड प्लेयर की तरह में बकबक करता रहूँगा, तू थोड़ा कष्ट करके सुनना। मेरी खिल्ली मत उड़ाना प्लीज़। मेरी बकबक से बेचैन मत हो जाना। तुझे याद है, बचपन में तू एक गुब्बारे के लिए मेरे कान के पास कितनी देर तक भुनभुन करता रहता था, जब तक मैं तुझे वह ख़रीद न देता था, याद आ रहा है तुझे? हो सके तो शरीर की गंध को भी माफ़ कर देना। मेरी देह में बुढ़ापे की गंध पैदा हो रही है। तब नहाने के लिए मुझसे ज़बर्दस्ती मत करना। मेरा शरीर उस समय बहुत कमज़ोर हो जाएगा, ज़रा-सा पानी लगते ही ठंड लग जाएगी। मुझे देखकर नाक मत सिकोड़ना प्लीज़! तुझे याद है, मैं तेरे पीछे दौड़ता रहता था क्योंकि तू नहाना नहीं चाहता था? तू विश्वास कर, बुढ़ों को ऐसा ही होता है। हो सकता है एक दिन तुझे यह समझ में आए, हो सकता है, एक दिन! तेरे पास अगर समय रहे, हम लोग साथ में गप्पें लड़ाएँगे, ठीक है? भले ही कुछेक पल के लिए क्यों न हो। मैं तो दिन भर अकेला ही रहता हूँ, अकेले-अकेले मेरा समय नहीं कटता। मुझे पता है, तू अपने कामों में बहुत व्यस्त रहेगा, मेरी बूढ़ा गई बातें तुझे सुनने में अच्छी न भी लगे तो भी थोड़ा मेरे पास रहना। तुझे याद है, मैं कितनी ही बार तेरी छोटे गुड्डे की बातें सुना करता था, सुनता ही जाता था और तू बोलता ही रहता था, बोलता ही रहता था। मैं भी तुझे कितनी ही कहानियाँ सुनाया करता था, तुझे याद है? एक दिन आएगा जब बिस्तर पर पड़ा रहूँगा, तब तू मेरी थोड़ी देखभाल करेगा ? मुझे माफ़ कर देना यदि ग़लती से मैं बिस्तर गीला कर दूँ, अगर चादर गंदी कर दूँ, मेरे अंतिम समय में मुझे छोड़कर दूर मत रहना, प्लीज़! जब समय हो जाएगा, मेरा हाथ तू अपनी मुट्ठी में भर लेना। मुझे थोड़ी हिम्मत देना ताकि मैं निर्भय होकर मृत्यु का आलिंगन कर सकूँ। चिंता मत करना, जब मुझे मेरे सृष्टा दिखाई दे जाएँगे, उनके कानों में फुसफुसाकर कहूँगा कि वे तेरा कल्याण करें। तुझे हर अमंगल से बचायें। कारण कि तू मुझसे प्यार करता था, मेरे बुढ़ापे के समय तूने मेरी देखभाल की थी। मैं तुझसे बहुत-बहुत प्यार करता हूँ रे, तू खूब अच्छे-से रहना। इसके अलावा और क्या कह सकता हूँ, क्या दे सकता हूँ भला।

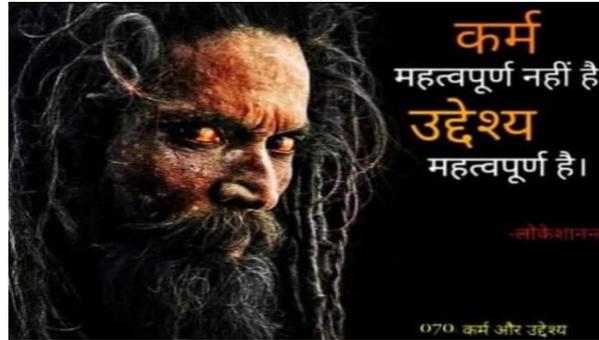
निःशब्द हूँ, हमारे बुजुर्गों को कुछ भी तो नहीं चाहिए, उनको चाहिए तो बुढ़ापे में एक छोटा सा साथ और तनिक सा प्यार, उनके जर्जर हाथों को एक छोटा स्पर्श शायद बुढ़ापे की सबसे बड़ी दवा भी यही है और चाहत भी। हम सब को अपने बुजुर्गों का, माता पिता का जितना भी संभव हो सके उनका ध्यान रखना चाहिए, उनका मान सम्मान रखना चाहिए, कभी भी जाने अनजाने में कोई कड़वे वचन नहीं बोलने चाहिए जिससे कि उनकी आत्मा को उनके मन को आहत पहुंचे बुजुर्गों के ही आशीर्वाद से हमारा अस्तित्व है।

## स्वांग

एक राज्य में एक स्वांग रचने वाला था। वह ऐसा स्वांग रचता था कि वह जो बनता , बिल्कुल वही हो जाता। कोई उसे पहचान ही न पाता था। उसकी चर्चा राजा तक पहुँची तो राजा ने उसे दरबार में आया। प्रणाम करके एक ओर खड़ा हो गया। राजा ने उससे पूछा कि तुम क्या क्या स्वाँग रच कहा-महाराज! मैं कुछ भी बन सकता हूँ। आप आदेश करें। राजा ने कहा-शेर का स्वाँग रचो। रच सकते हो? स्वाँग रचने वाले ने कहा-महाराज! और कुछ बनवा लें, शेर न बनवाएँ, इसमें बहुत खतरा है।

राजा बोला-तुम्हें कोई खतरा नहीं है, जो कुछ हो जाए , मैं दण्ड नहीं दूंगा। तुम शेर होकर दिखाओ। स्वाँग भरने वाला तैयारी करने गया। तीन महीने बाद शेर बन कर आया। एक दम असली शेर जैसा। वही चाल, वही तड़ी। वैसी ही आँखें, वैसी ही दहाड़। दरबार में विचित्र भय पैदा हो गया। सब विस्मित रह गए। लेकिन एक भूल हो गई, राजकुमार ने हल्की सी छड़ी मार दी। स्वाँग रचने वाला तो वहाँ था ही नहीं, वहाँ तो शेर ही था। उसके हाथ में बाघ नख था, एक झटके में ही राजकुमार को फाड़ डाला। राजा को दुख तो बहुत हुआ, पर दण्ड नहीं दिया। बोला- ईनाम तो मिलेगा।

परंतु एक स्वाँग और रचना पड़ेगा। एक बार संत का स्वाँग रच कर दिखाओ। स्वाँग रचने वाले ने कहा-महाराज! इसमें बहुत समय लगेगा, आप प्रतीक्षा करें। वह एक संत के पास गया, दीक्षा ली और तीन वर्ष के अभ्यास से, एक दम शान्त, शीतल , संत ही हो गया। तब वह दरबार में आया। बड़ी दाढ़ी, शरीर पर लंगोटी, चेहरे पर तेज राजा पहचान तक न पाया। चरणों में झुका आसन दिया। सेवा की और पूछा- महात्मा जी! मेरे लिए क्या आदेश है? स्वाँग भरने वाला आसन से नीचे उतर आया, तेज मित गया, हाथ फैला कर बोला-लाईये महाराज! मेरा ईनाम दे दीजिए। इस पर राजा ने कहा



कर्म महत्वपूर्ण नहीं है, उद्देश्य महत्वपूर्ण है। कर्म तो उस स्वाँग रचने वाले ने भी वही किया जो परमात्मा प्राप्ति की इच्छा वाले साधक करते हैं। पर उसका उद्देश्य परमात्मा प्राप्ति नहीं था, ईनाम पाना उद्देश्य था। उसकी दृष्टि ईनाम पर ही होने से, वह इतना साधन और ऐसी ऊँची स्थिति पाने के बाद भी, वैसे का वैसे ही रहा। उद्देश्य बदल जाता तो वह जन्म मरण से ही छूट जाता।

(अतुल सिंह तोमर)  
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

## बढ़ता शहरी प्रदूषण, होता प्राकृतिक दोहन



आजकल दुनिया में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती जा रही है। विशेषकर शहरों में यह स्थिति अत्यंत ही चिंताजनक है। यह लगातार बढ़ता प्रदूषण प्रकृति, मनुष्यों और जीव जंतुओं के लिए हानिकारक है। जितनी उन्नति विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने की है, उतना ही उसका गहरा प्रभाव प्रकृति और पर्यावरण पर पड़ा है। आज हम कई विपदाओं का सामना कर रहे हैं, उसमें से एक प्रदूषण है। शहरों को कई दशकों से उन्नत और शक्तिशाली बनाने के लिए वन, पेड़ इत्यादि धड़ल्ले से काटकर उसके स्थान पर बड़ी-बड़ी इमारत, बिल्डिंग्स, शॉपिंग मॉल, फैक्ट्रीज बनाई जा रही हैं। मनुष्य तरक्की और कामयाबी पाने के लिए अपनी ही सुन्दर प्रकृति को कई वर्षों से नुकसान पहुँचाता आ रहा है।



मनुष्य ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है। मानव ने शहर निर्माण में ज़्यादा ध्यान दिया है, जिससे औद्योगीकरण के स्तर में विकास हुआ। अत्यधिक औद्योगीकरण के कारण वायु, जल और मिट्टी प्रदूषित होने लगी है। कारखानों से निकलने वाला दैनिक जानलेवा धुँआ वायु को प्रदूषित कर रहा है। शहरीकरण के कारण लोगों को एक जगह से दूसरे जगह जाने के लिए वाहनों की ज़रूरत पड़ती है। सड़क पर बढ़ता हुआ ट्रैफिक, गाड़ियों से निकलने वाला धुँआ हमें साँस नहीं लेने देता है। कारखानों से निकलने वाली जहरीली गैसों मनुष्य और प्रकृति में रहने वाले सारे जीवों के लिए हानिकारक है। इस का निवारण करना ज़रूरी है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे महानगरों में प्रदूषण अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। कारखानों से निकलने वाला अपशिष्ट जल नदियों में प्रवाहित कर दिया जाता है। मनुष्यों ने कई नदियों को ऐसे ही प्रदूषित कर दिया है। परिणाम स्वरूप आज हम प्रदूषित शहरों में जीने के लिए मज़बूर हैं। इन प्रदूषणों के कारण मनुष्य को कई प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को झेलना पड़ रहा है।



शहरीकरण ने जहाँ-जहाँ उन्नति की, वहाँ-वहाँ पर्यावरण के लिए भयंकर परिस्थितियाँ पैदा कर दी हैं। हमारे पास आधुनिक जीवन और आरामदायक साधन हैं, लेकिन अच्छा पर्यावरण नहीं है, जिसमें हम निश्चिंत होकर साँस ले सकें, तो वहीं दूसरी ओर देश की बढ़ती आबादी के कारण, भवन, मार्ग, पुल निर्माण हेतु स्थान नहीं मिल पा रहा है, जिसके कारण वनों की कटाई की जा रही है। इससे प्राकृतिक प्रदूषण की स्थिति और गंभीर हो रही है।



पहले पेड़ों पर चिड़ियाँ चहकती थी, पेड़ और पौधों से भरे उद्यान होते थे, बच्चे खुले आकाश के नीचे खेलते थे। आज वैसा बिलकुल नहीं है। यह प्रदूषण के कारण ही हो रहा है। हमें तेज़ी से बढ़ते इस प्रदूषण को रोकने के लिए कठोर प्रयास करने होंगे ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ी को एक स्वस्थ समाज दे सकें। इसके लिए जगहों पर वृक्षारोपण किए जाएं और वृक्षारोपण की गति में वृद्धि की जाए क्योंकि पेड़-पौधों से हमें ऑक्सीजन प्राप्त होती है, साथ ही कई ज़रूरी सामग्री वृक्षों से मिलती है। अगर वृक्ष नहीं होंगे तब पृथ्वी की इस सुन्दर धरा को बचा पाना नामुमकिन हो जाएगा।

प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए जनसंख्या नियंत्रित करना अनिवार्य है। अगर शहरों में दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाएँ गाँव में उपलब्ध होगी, तब गाँव के लोग रोज़गार के लिए अपना गाँव छोड़कर शहर नहीं आएंगे। हालांकि सरकार इस दिशा में प्रयासरत है, लेकिन फिर भी अधिकाँश गाँव में बिजली, पानी जैसी सुविधा कम मिल पा रही है। गाँव को भी उन्नत करने की ज़रूरत है, लेकिन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाकर बिलकुल नहीं। प्रदूषण को रोकने के लिए प्रशासन और जनता दोनों को एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने की ज़रूरत है और यदि शासनतंत्र व प्रजातंत्र एक साथ कार्य करता है, तो प्राकृतिक संरक्षण सबल हो सकता है। हम सब को मिलकर शहरों में बढ़ रहे इस प्रदूषण के रोकथाम के लिए बेहतर उपाय करने होंगे।

(प्रमोद कुमार द्विवेदी)  
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

## संघर्ष ही सफलता की कुंजी



संघर्ष! यह एक ऐसा अनुभव है जिससे शायद ही दुनिया का कोई व्यक्ति वंचित हो। हमें बचपन से ही सिखाया जाता है, कुछ भी पाने के लिए संघर्ष करना ही पड़ता है। बिना इसके कभी कुछ हासिल नहीं होता। इसमें कोई दो राय नहीं कि संघर्ष जीवन को तराशता है, निखारता है, सँवारता है और फिर हमें ऐसे साँचे में गढ़ता है जिसकी प्रसिद्धी दुनिया करते नहीं थकती। शायद यही वो मुकाम होता है, जिसके लिए मनुष्य अथक प्रयास करता है, जिसे हम संघर्ष कहते हैं। संघर्ष जीवन के उतार-चढ़ाव का अनुभव कराता है, अच्छे-बुरे का ज्ञान करवाता है, सतत सक्रिय रहना व समय की कीमत सिखाता है, जिससे प्रेरित होकर हम संपूर्ण शक्ति के साथ फिर से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होते हैं।



दुनिया का हर व्यक्ति जीवन में सफलता की उम्मीद करता है, जिसके लिए वह अथक प्रयास भी करता है। कई बार कुछ अलग करने की चाह और प्रबल प्रेरणा से व्यक्ति अपने मुकाम के करीब पहुँच भी जाता है लेकिन कुछ कठिन संघर्ष को सामने देख सफलता से वंचित हो जाता है। वह नहीं जान पाता कि उनके साथ ऐसा क्यों होता है, जिस कारण उसके सपने अधूरे रह जाते हैं और जीवन के अंतिम पलों तक इच्छाएँ आधी-अधूरी रह जाती हैं। ऐसी इच्छाएँ किसी को भी जीवन से निराश करती हैं। क्योंकि अधिकांश लोग अपने संपूर्ण जीवन में यह जान ही नहीं पाते की सफलता कैसे हासिल हो।

दोस्तो! जीवन 'संघर्ष' का दूसरा नाम है। एक बात हमेशा याद रखिए, अपनी मंजिल का आधा रास्ता तय करने के बाद पीछे ना देखे बल्कि पूरे जूनून और विश्वास के साथ बाकी की आधी दूरी तय करें, बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। आगे बढ़कर भी अगर सफलता ना मिल पाई तो भी कोई बात नहीं कम से कम अनुभव तो नया होगा। बार-बार हार के भी हिम्मत के साथ अपने लक्ष्य की तरफ कदम बढ़ाना ही संघर्ष है। अपनी हर असफलता से कुछ सीखिए और निडरता के साथ संघर्ष का दामन थाम के मंजिल की ओर आगे बढ़िए।

जब तक जीवन में संघर्ष नहीं होता तब तक जीवन जीने के अंदाज को, सच्ची खुशी को, आनंद को, सफलता को अनुभव भी नहीं कर सकते। जिस तरह बिना चोट के पत्थर भी भगवान नहीं होता। ठीक उसी तरह मनुष्य का जीवन भी संघर्ष की तपिश के बिना ना तो निखर सकता है, ना शिखर तक पहुँच सकता है और ना ही मनोवांछित सफलता पा सकता है। क्योंकि "संघर्ष हमारे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है और वो हमें सहनशील, संवेदनशील और देवतुल्य बनाता है।" संघर्ष के इस सूत्र को समझिए और उसपर चलने की कोशिश कीजिए। यकीन मानिए आप जीवन को एक अलग रूप से देखने लगेंगे।

**"इच्छाशक्ति + स्थिरता = संकल्प,  
संकल्प + कड़ी मेहनत (संघर्ष) = सफलता"**

आप सोच रहे होंगे यह सब पढ़ना या लिखना बहुत आसान है लेकिन करना बहुत ही मुश्किल! दोस्तों, जीवन कभी भी आसान नहीं होता। सरलता व सहजता से कभी किसी को कुछ हासिल नहीं हुआ। इतिहास गवाह है इस बात का आज भी लोग महान और सफल लोगों को उनके संघर्ष से उन्हें याद करते हैं। संघर्ष से डर के जीवन में अपने कदमों को पीछे मत कीजिए। आज का संघर्ष आपके कल को सुरक्षित करता है। आप जिस तरह का संघर्ष करते हैं भाग्य भी उसी के अनुरूप फल देता है। यह सत्य है जीवन में कई बार बुनियादी, सामाजिक, पारिवारिक आदि समस्याएँ आ जाती हैं तब लक्ष्य के प्रति संघर्ष की इच्छाशक्ति को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है क्योंकि ऐसी परिस्थिति में जीवन का संघर्ष कई गुणा बढ़ जाता है। लेकिन ऐसी स्थिति में भी सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति अपनी आंतरिक इच्छाशक्ति की ताकत और शारीरिक व मानसिक क्षमता के बल पर किसी भी संघर्ष से जूझ सकता है। बस उसमें अपने लक्ष्य के प्रति ललक होनी चाहिए। क्योंकि "जितना कठिन संघर्ष होगा, जीत भी उतनी ही शानदार होगी।"

**(एसएस बालानी)  
प्रबंधक (तकनीकी सहायक)**

## अकबर और बीरबल तथा तीन गुड़ियां



एक बार एक कलाकार तीन सुन्दर गुड़ियों को लेकर बादशाह अकबर के दरबार में आया। ये गुड़ियां बिल्कुल एक समान थीं। उनमें इतनी समानता थी कि उनके बीच अंतर करना बहुत मुश्किल था। अकबर को गुड़ियां बहुत प्यारी लगी। उसने कहा, “ये गुड़ियां मुझे बेच दो और मैं तुम्हें इनकी अच्छी कीमत दूंगा।” कलाकार ने कहा, “जहांपनाह! ये गुड़ियां बेचने के लिए नहीं हैं। बेशक मैं आपको ये उपहार के रूप में दे दूंगा यदि आपके दरबार में कोई यह बता दे कि तीनों में से अच्छी कौन सी है।” यह एक अजीब पहेली थी। अकबर ने गुड़ियों को उठाया और करीब से देखा। किंतु तीनों गुड़ियों में इतनी समानता थी कि अकबर यह नहीं कह सका कि कौन सी अच्छी है। तब उनके प्रत्येक मंत्री ने इस पहेली को सुलझाने की कोशिश की, परंतु वे सभी असफल रहे।



अकबर ने बीरबल को बुलाकर कहा, “बीरबल तुम क्यों नहीं कोशिश करते। मुझे विश्वास है कि तुम इस पहेली को हल कर लोगे।” बीरबल अकबर की ओर सम्मान से झुका और गुड़ियों के पास गया। उसने प्रत्येक गुड़िया को हाथ में उठाया और बड़ी बारीकी से उनको देखा। हर कोई आश्चर्यचकित था। उसने एक गुड़िया के कान में फूंक मारी। हवा उसके दूसरे कान से बाहर आ गई। फिर उसने दूसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी, किंतु इस बार हवा उसके मुंह से निकली। जब बीरबल ने तीसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी तो हवा कहीं से भी बाहर नहीं निकली।

बीरबल ने कहा, “जहांपनाह! यह तीसरी गुड़िया ही इन तीनों में सबसे अच्छी है।” अकबर हैरान हो गया। उसने कहा, “तुमने यह कैसे जान लिया?” बीरबल ने कहा, “मेरे मालिक! यह तीनों गुड़ियां तीन व्यक्तियों की तरह हैं। जब मैंने पहली गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो यह दूसरे कान से बाहर आ गई। ऐसे ही जब हम एक रहस्य किसी दूसरे व्यक्ति को बताते हैं तो वह अगले ही पल उसे भूल जाता है। जब मैंने दूसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो वह उसके मुंह से बाहर निकल गयी। ऐसे ही कुछ व्यक्ति जो कुछ सुनते हैं, उसे शीघ्र ही दूसरे व्यक्ति को बता देते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी रहस्य को छुपाकर नहीं रख सकते। किंतु जब तीसरी गुड़िया के कान में फूंक मारी, तो हवा कहीं से भी बाहर नहीं आई। इस तरह के व्यक्ति अच्छे होते हैं, जो रहस्य को छुपाकर रखते हैं। आप इन्हें कोई भी रहस्य की बात बता सकते हैं।”

कलाकार ने कहा, “मैंने अभी तक केवल बीरबल के ज्ञान के बारे में सुना था, किन्तु आज मैंने इसे देख भी लिया। जहांपनाह, ये गुड़ियां आपकी हैं।” अकबर ने कहा उसे बीरबल पर बहुत गर्व है।

(संजीव कुमार)  
वरिष्ठ तकनीशियन

## गर्मी ने किया हाल बुरा



जाने ये कैसा बवाल हुआ  
अपना जीना मुहाल हुआ,  
नहा रहे हैं सब बिन पानी  
गर्मी में बुरा है हाल हुआ।

नींद न आती रातों को  
पंखे एसी सब फेल हुए  
खुद के घर भी अब तो जैसे  
लगे तिहाड़ के जेल हुए,

रोता छोटा बच्चा अब तो  
अपने जी का जंजाल हुआ  
नहा रहे हैं सब बिन पानी  
गर्मी में बुरा है हाल हुआ।

बादल भी देखो उमड़-उमड़ कर  
अपने रंग दिखाता है  
उम्मीद बंधे जब बरखा की  
सबको ये ठेंगा दिखाता है,

शीत लहर तन में लगना  
अब तो जैसे एक ख्याल हुआ  
नहा रहे हैं सब बिन पानी  
गर्मी में बुरा है हाल हुआ।

नींद उड़ी है रातों की  
दिन में बुरा है हाल हुआ  
नहा रहे हैं सब बिन पानी  
गर्मी में बुरा है हाल हुआ।

जाने किसका गुस्सा हम पर  
सूर्य देव हैं निकाल रहे,  
आलू की तरह क्यों हमको  
दिन-रात ही ये उबाल रहे,

जाने कौन सी खता हमारी  
मन में खड़ा है यही सवाल हुआ  
नहा रहे हैं सब बिन पानी  
गर्मी में बुरा है हाल हुआ।

(अनुज कुमार)  
वरिष्ठ तकनीशियन

## ऑनलाइन शिक्षा का महत्व



आज के दौर में इंटरनेट जैसी सुविधा सभी घरों में आसानी से उपलब्ध है। आजकल कोविड 19 की इस आपातकालीन स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा काम आ रही है। आज हर जगह ऑनलाइन शिक्षा ज़्यादा प्रचलित और लोकप्रिय हो गयी है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसका उपयोग करके शिक्षक देश और दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन अपने छात्रों के साथ जुड़ सकता है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए तीव्र गति की इंटरनेट और लैपटॉप / कंप्यूटर की आवश्यकता होती है। आज लोग मोबाइल से भी ऑनलाइन पढ़ने के लिए जुड़ रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा के कई फायदे हैं और यह एक प्रकार का महत्वपूर्ण शिक्षण माध्यम है। ऑनलाइन शिक्षा आज विद्यार्थियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऑनलाइन शिक्षा ने विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान किया है।

लॉकडाउन के इस कठिन वक़्त में जहाँ सभी विद्यालय और कॉलेज बंद हैं। स्कूल और कॉलेज की सभी कक्षाओं की पढ़ाई ऑनलाइन द्वारा संभव हो पाई है। विश्व के सभी विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा का इस्तेमाल करके अपना अध्ययन कर पा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा का महत्व लोग आज अच्छे तरह से समझ पा रहे हैं। अगर आज ऑनलाइन माध्यम ना होता तो यह साल पढ़ाई अधूरी रह जाती और करोड़ों बच्चे पढ़ नहीं पाते।



ऑनलाइन शिक्षा के लिए तीव्र गति के इंटरनेट की ज़रूरत होती है जो शहरों और महानगरों में रहने वाले लोगों के लिए प्राप्त करना सरल है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट उपलब्ध नहीं होता है। ऑनलाइन शिक्षा एक अनोखा और अद्भुत माध्यम है। आज लोग कई यूनिवर्सिटी और कई शहरों में जहां जाकर पढ़ नहीं सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा ने इस चीज़ को सरल बना दिया है। आप ऐसे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन दाखिला ले सकते हैं और अपने मनपसंद विषय की पढ़ाई कर सकते हैं। इंटरनेट सस्ता हो गया है, इसलिए लोगों के घरों में उपलब्ध हो जाता है। ऑनलाइन शिक्षा आधुनिक ज़माने की शिक्षा का एक नया रूप है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों को यात्रा करके छात्रों को पढ़ाने के लिए गंतव्य स्थान तक जाना नहीं पड़ता है। इससे समय और पैसे की बचत होती है। छात्र एवं शिक्षक अपने सुविधानुसार कभी भी पढ़ने और पढ़ाने का समय रख सकते हैं। सभी व्याख्यान और आवश्यक सामग्री ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से प्रदान की जाती है, ताकि छात्र आसानी से अपने घर पर आराम से पढ़ सकें। विदेशों के कई अनुभवी शिक्षकों के लेक्चर को छात्र भारत या किसी भी देश में घर बैठे सुन और समझ

सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा का एक और महत्व है, आप अपनी ऑनलाइन क्लास की रिकॉर्डिंग कर सकते हैं। अगर आप कुछ भूल जाए तो बाद में उसे प्ले करके समझ सकते हैं। ऑनलाइन क्लास को रिकॉर्डिंग करने की वजह से छात्र अपने किसी प्रकार की शंका को दूर कर सकते हैं। अगले क्लास में विद्यार्थी उन अनसुलझे संदेहों को अध्यापकों से पूछ सकते हैं।

आजकल बच्चों को दूर जाकर कोचिंग करने की आवश्यकता नहीं है। ऑनलाइन क्लास द्वारा वह अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे हैं। कई विश्वविद्यालय के छात्र पढ़ाई ऑनलाइन करते हैं। ऑनलाइन परीक्षा देकर छात्र डिग्री भी हासिल कर लेते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थी का बहुमुखी विकास हो रहा है। ऑनलाइन संगीत, नृत्य, योग, सिलाई, कढ़ाई, चित्रकारी और कई प्रकार की गतिविधियां सरलता से सीखी जा सकती हैं।

आज के इस मुश्किल कोरोना संकटकाल में विद्यार्थी अपने प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बाहर इंस्टिट्यूट जाने में असमर्थ हैं। ऑनलाइन शिक्षा ने इस मुश्किल को सरल बना दिया है। विद्यार्थी घर बैठे ही ऑनलाइन इन परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। विद्यार्थी अपने डिग्री कोर्स की पढ़ाई, परीक्षा की तैयारी सब ऑनलाइन क्लास की मदद से कर पा रहे हैं, जो विद्यार्थी अपने अधूरी पढ़ाई को पूरा करने के लिए विदेश नहीं जा पा रहे हैं, वे घर बैठे ऑनलाइन विदेश के लोकप्रिय शिक्षा केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ऑनलाइन क्लास द्वारा आप अपने आरामदायक समय के मुताबिक पढ़ाई कर सकते हैं। यह विद्यार्थी को लक्ष्य के साथ प्रगति करने में सक्षम बनाती है। इस तरह की प्रणाली को लाइव सेशन में भाग लेने की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी समय उन सामग्रियों तक पहुँच सकते हैं जो आपके लिए ज़रूरी होती हैं। आप अपनी सुविधा अनुसार ऑनलाइन पठन सामग्री को कभी भी पढ़ सकते हैं।

लॉकडाउन और कोरोना संकटकाल की इस विषम परिस्थिति में सिविल सेवा परीक्षा और मेडिकल की परीक्षाएं ऑनलाइन हो रही हैं। कोविड काल में, हमें सामाजिक दूरी का पालन करना पड़ा है और आने वाले समय में इसका पालन कब तक करना पड़ेगा, पता नहीं। ऐसे समय में विद्यार्थियों और शिक्षा संस्थानों के लिए ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान बनकर सामने आया है। लोगों का रुझान ऑनलाइन शिक्षा की तरफ ज़यादा बढ़ रहा है। कई जगह नौकरी करने वाले लोग अपनी आगे की पढ़ाई के लिए शिक्षा संस्थान जाने में असमर्थ हैं। इसलिए ऑनलाइन क्लास उनके लिए वरदान से काम नहीं है। गाँव में पढ़ने वाले बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा नहीं मिल पा रही है। गाँव में रहने वाले परिवार के पास कंप्यूटर और इंटरनेट पर खर्च करने के लिए पैसे नहीं हैं। यही वजह है, गाँव में विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं।

ऑनलाइन सीखने के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि आप आराम से और तनाव रहित होकर सीख सकते हैं। आपको केवल सीखने के लिए जुनून की ज़रूरत है। एक त्वरित ऑनलाइन खोज की आवश्यकता है जो आपको सही पाठ्यक्रम तक ले जाएगी। ऑनलाइन शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। ऑनलाइन द्वारा आजकल लोग दफ्तरों के कार्य, घर पर बैठकर कर रहे हैं। कई बार कोचिंग इंस्टिट्यूट दूर होने की वजह से अभिभावक अपने बच्चों को भेज नहीं पाते थे। मगर अब यह परेशानी भी ऑनलाइन शिक्षा ने दूर कर दी है। ऑनलाइन शिक्षा से सिर्फ स्कूल या कॉलेज की शिक्षा ही नहीं बल्कि विभिन्न तरह की उच्च शिक्षा भी प्राप्त की जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रकार के मार्केटिंग कोर्स जैसे डिजिटल, एफिलिएट मार्केटिंग इत्यादि कोर्स घर बैठे कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा द्वारा विद्यार्थी अध्यापक से किसी भी समय अपने समस्याओं को साझा कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें इंस्टिट्यूट जाने की आवश्यकता नहीं होती।



## देश भक्ति की कविता



देश की समृद्धि सुख शांति के लिए  
भटकन भावना की भ्रांति के लिए  
परिदृश्य देखके तैयारी कर ले  
आने वाली नई क्रांति के लिए

पैदा हर सांस में लगन कर ले  
शीतल कलेजे की अगन कर ले  
जय हिंद जय हिंद वंदे मातरम कभी-कभी ऐसे भी भजन कर ले  
हंसते-हंसते फांसी चढ़कर अपनी जान गवा दी  
और हमें बदले में दे दी यह पावन आजादी

मन में खुद को लगन कर ले  
अमर शहीदों को नमन कर लें  
जय हिंद जय हिंद वंदे मातरम कभी-कभी ऐसे भी भजन कर ले

पूर्वजों के शौर्य को बचाए रखना  
सुधीर को मन में सजाए रखना  
कवियों की कविता याद करके  
अपने तिरंगे को उठाए रखना

हरा भरा यहां उपवन कर ले  
ईर्ष्या चलन को दफन कर ले  
जय हिंद जय हिंद वंदे मातरम कभी-कभी ऐसे भी भजन कर ले

राष्ट्रभक्त की गाथाओं ने  
सोई आस जगा दी  
किसी तरह से होना पाये  
अब इसकी बर्बादी

(विनोद कुमार)  
वरिष्ठ तकनीशियन

## मानसिक शांति



मन की शांति किसी भी मनुष्य के लिए एक अनमोल धन है। इसके बिना जीवन में सब कुछ बेकार है। अगर आपके मन में शांति नहीं होगी तो आप इस दुनिया की किसी भी चीज से प्रसन्न और आनंदित नहीं हो सकते भले ही आपके पास कितना भी धन क्यों ना हो। वहीं अगर आपके पास मन की शांति है तो आप झोंपड़ी में भी प्रसन्नता के साथ रह सकते हैं। मन की शांति एक ऐसा अनमोल धन है, जिसकी प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए और हमेशा इस मूल्यवान धन की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि कोई भी व्यक्ति धन का आघात तो सहन कर सकता है, परंतु मानसिक पीड़ा को सहन करना व उससे उभरना अत्यंत ही दुर्साध्य कार्य है। यह एक ऐसा खजाना है, जो आपको बड़ा भाग्यवान और ताकतवर बना देती है।

**मन की शांति को खरीदा नहीं जा सकता; मन की शांति अनमोल है।**

यह सत्य है कि आज के समय में अच्छा जीवन जीने के लिए पैसा बहुत जरूरी है परंतु पैसा ही सब कुछ नहीं है। लेकिन संतोष और मन की शांति के आगे पैसा महत्वहीन हो जाता है। यह एक ऐसी चीज है जो हमें अपने अन्दर विकसित और धारण करनी होती है। आज दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं जिनके पास अथाह संपत्ति है पर फिर भी वे खुद को कंगाल समझते हैं क्योंकि उनके पास मन की शांति नहीं है।



सफलता प्राप्त करने के लिए मन की शांति होना बहुत जरूरी है। एक अशांत और चिंतित मन से आप किसी बढ़िया परिणाम की उम्मीद नहीं कर सकते। अशांत मन किसी भी काम पर पूरा फोकस ठीक से नहीं कर पाता, जिससे कोई भी कार्य अपने सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता। तनाव और खुशी दोनों तरह की मस्तिष्क की स्थिति में किए गए कामों का अवलोकन करके देखिए जो काम एक happy mood से पूरी शांति के साथ किया जाता है उसकी quality ही कुछ अलग होती है।

**पैसा कमाना और मन की शांति**

पैसा कमाना बहुत जरूरी है लेकिन कुछ लोग पैसा कमाने की दौड़ में इस तरह से लग जाते हैं कि वो अपनी life की दूसरी चीजों को खतरनाक तरीके से नजरअंदाज करने लगते हैं। कुछ समय बाद एक ऐसा समय आता है कि जीवन में दूसरी जरूरी चीजें उनके हाथ से निकलने लगती हैं जैसे स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन, मन की शांति और प्रसन्नता। पैसा कमाना भी जरूरी है और अपने जीवन की दूसरी

आवश्यक बातों पर ध्यान देना भी जरूरी है। इसलिए ध्यान रखें कि रुपया पैसा कमाने की भागदौड़ में जिंदगी की अन्य जरूरी जिम्मेदारियां और मन की शांति पीछे न छूटने पाए।

*सकारात्मकता से आती है शांति*

किसी ने सच ही कहा है –

**शांति का कोई मार्ग नहीं है, बल्कि शांति खुद ही एक मार्ग है।**

शांति की शुरुआत मुस्कराहट के साथ होती है। सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मन की शांति है। मन की शांति आपके मन से ही शुरू होती है और मन पर ही खत्म होती है अगर आपकी लाइफ में शांति है तो आप संसार के सबसे सुखी व्यक्ति हैं। जीवन के प्रति सकारात्मकता और मन की शांति का आपस में गहरा संबंध है। एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबतों को भी आसानी से पार कर जाता है। मन को शांति रखने की कला आती है वो सच्चे अर्थों में एक बहुत ही चतुर इन्सान है। ऐसा व्यक्ति हरदम खुश रहता है और नकारात्मकता उसके पास भी नहीं फटकती। अगर आप सकारात्मक सोच और मानसिक शांति दोनों को बनाये रख सकते हैं तो आप अपने जीवन में खुश रहना सीख सकते हैं। अगर आप सोचते हैं कि आप हर समय परेशान नहीं रहें तो आपको खुद को शांत रखने की कला सीखनी होगी। एक शांत और प्रसन्न चित्त मष्तिष्क बड़ी से बड़ी समस्या को भी आसानी से सुलझा लेता है। शांत चित्त में ही हम सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। इसलिए मन की शांति के महत्व को समझना बहुत जरूरी है।

**मन की शांति क्यों जरूरी है ?**

जिंदगी की महत्वपूर्ण दौलतों में से एक है मन की शांति। इस दौलत के बिना आप अमीर नहीं कहला सकते क्योंकि ऐसी अमीरी किस काम की जहाँ उसे पाकर भी खुशी नहीं हो। शांति एक ऐसी चीज है जो किसी भी उपलब्धि पर मन को सुकून देती है। अशांत मन हमेशा कुछ न कुछ उधेड़बुन में ही लगा रहता है और जिंदगी के सुख-ऐश्वर्य को भोगने के आत्मिक सुख से वंचित रहता है। सुख को महसूस करने के लिए मन में शांति भी तो जरूरी है। अगर आप एक सच्चे दौलतमंद इंसान बनना चाहते हैं तो मन की शांति बनाये रखने के बारे में भी सोचिये। इस बात का प्रयास कीजिये कि आप कैसे खुद को अक्सर सकारात्मक रख सकते हैं। मन की शान्ति सफलता पाने के लिए भी जरूरी है और सफलता को एन्जॉय करने के लिए भी। उदाहरण के लिए आप भारतीय क्रिकेट टीम को ले सकते हैं। क्रिकेटिंग स्क्वैड की बात की जाए तो धोनी को बेस्ट नहीं कहा जा सकता लेकिन अगर टेम्परामेंट की बात हो तो उनका कोई सानी नहीं है, इसीलिए लोग उन्हें कप्तान कूल भी कहते हैं और यही संयमता और सकारात्मकता उन्हें इतनी सफलता दिलाती है। इसके अलावा ये सफलता का सही तरह से जश्न मनाने में भी मदद करती है।

**कड़वाहट को भुलाइये, माफ़ करिए और मधुरता को अपनाइए**

बहुत से लोगों की आदत होती है कि वो पुरानी बातों को सालों साल तक याद रखते हैं और उन पर सोचते रहते हैं। कसी ने कुछ कड़वी बात कह दी तो उसे लम्बे समय तक दिमाग में रखना और उस पर सोचते ही रहना मन की शांति को बिगाड़ने के लिए पर्याप्त है। इसलिए कड़वी बातों को अधिक समय तक मन में न रखें। इसके बजाय आप कुछ अच्छी और मधुर स्मृतियों के बारे में सोच सकते हैं, जो आप के मन को अच्छी लगे।

ये बात याद रखिये –

**जीवन में शांति से जीने के लिए दो ही तरीकें है माफ़ कर दो उन्हें जिन्हें तुम भूल नहीं सकते भूल जाओ उनको जिन्हें तुम माफ़ नहीं कर सकते।**



## अमीरी और गरीबी



अकबर बीरबल से तरह-तरह के अजीबो-गरीब प्रश्न पूछा करते थे। कुछ प्रश्न ऐसे भी होते थे, जो वह बीरबल की बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए पूछते थे। एक बार बादशाह अकबर बीरबल से बोले- बीरबल इस दुनिया में कोई अमीर है कोई गरीब हैं ऐसा क्यों होता है? सब लोग ईश्वर को परमपिता कहते हैं इस नाते सभी आदमी उनके पुत्र ही हुए। पिता अपने बच्चों को सदा खुशहाल देखना चाहता है। फिर ईश्वर परमपिता होकर क्यों किसी को आराम का पुतला बनाता है और किसी को मुट्टीभर अनाज के लिए दर-दर भटकाता है?

आलमपनाह अगर ईश्वर ऐसा न करे, तो उसकी चल ही नहीं सकती। वैसे तो दुनिया में पांच पिता कहे गये हैं। इस नाते आप भी अपनी प्रजा के पिता हैं फिर आप किसी को "हजार" किसी को "पांच-सौ" किसी को पचास तो किसी को सिर्फ "पांच-सांत रुपये" ही वेतन देते हैं। जबकि एक महीने तक आप सभी से सख्ती से काम लेते हैं। ऐसा क्यों? सभी को एक ही नजर से क्यों नहीं देखते? बीरबल ने बादशाह के प्रश्न का उत्तर देने के बजाय प्रश्न किया बादशाह तुरन्त कोई भी जवाब नहीं दे सके उल्टे सोच में पड़ गये।

बादशाह को इस तरह खयालों में खोया देखकर बीरबल बोले -"जो जैसा काम करता है, उसे वैसी ही फल मिलता है।" और इसी पर दुनिया का कारोबार चलता है। अगर ऐसा न हो, तो यह दुनिया चल ही नहीं सकती। ऐसा ईश्वर का न्याय होता है।

वह कभी नहीं चाहता कि दुनिया के लोग दुख उठाये, ईश्वर हमेशा उन्हें मुश्किलों से बचाता है। लेकिन जो कोई उसकी बात नहीं मानता तो उसे सजा भुगतनी ही पड़ती है। जो जैसा काम करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। जो ज्यादा मेहनत करता है वह धनवान बनता है, जो कम काम करता है वह गरीब होता है। इसमें ईश्वर का क्या दोष?

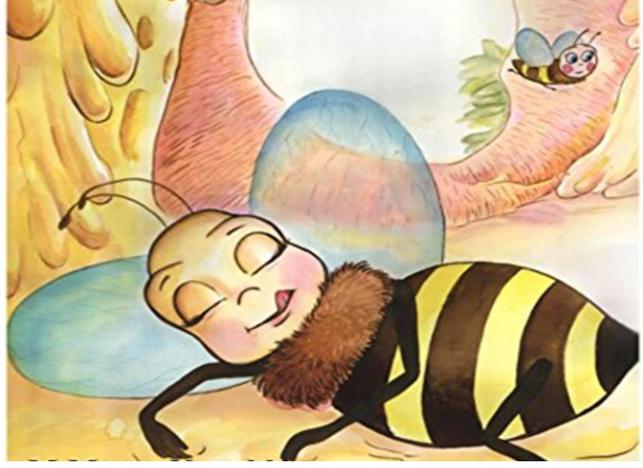
**अच्छी तरह से ध्यान दें:** अगर किसी कहानी में वैज्ञानिक आधार और यौक्तिकता नहीं है, तो इसे सत्य मानना या नैतिक ज्ञान समझना मूर्खता है। हालांकि कुछ कहानियाँ मनोरंजन और नीति ज्ञान के लिए क्यों न लिखी गई हों, लेकिन ये ज्यादातर वर्ण व्यवस्था यानि जात पात, अंध विश्वास, तर्क हीनता, अज्ञानता, नफरत, धर्म, हिंसा और व्यक्ति विशेष के प्रचार और प्रसार के उद्देश्य से लिखी गई धूर्त कहानियाँ हैं। इसलिए ये कहानियाँ आपको पढ़कर उसकी सच्चाई भी आप को जानने की जरूरत है। जैसे अच्छा खाने से एक अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण होता है, वैसे ही अच्छे ज्ञान से अच्छा दिमाग विकसित होता है। अगर किसी व्यक्ति का काल्पनिक और मानसिक स्तर वास्तविकता के साथ समानता नहीं रखता है और अंध विश्वास के अधीन होकर अज्ञानता का अधिकारी बन जाये तो उसको मानसिक विकृति कहा जाता है।

(जयराम मीणा)  
वरिष्ठ कार्यालय सहायक

## आलसी मधुमक्खी



मधुमक्खियों का एक बहुत बड़ा झुंड था। उस झुंड में कई सारी मधुमक्खियाँ थीं, जो एक साथ मिलकर रहती थीं। उन सब में एक मधुमक्खी बहुत आलसी थी। वह बाकी मधुमक्खियों से बिल्कुल अलग थी। उसे काम करना बिल्कुल पसंद नहीं था। झुंड में रहती थी तो काम भी बहुत कम ही किया करती थी, परंतु उसे ऐसा लगता कि वह सबसे ज्यादा काम करती हैं।



एक दिन जब वह सभी मधुमक्खियों के साथ फूल के बगीचे में गई तो उसने वहां तितली को देखा और सोचने लगी। यह तितलियाँ काम कम करती हैं, तभी इतनी सुंदर दिखती है। सारे लोग इन्हें इतना पसंद करते हैं। इनकी सुंदरता के कारण उसने सोचा क्यों न आज से मैं इन तितलियों से दोस्ती कर लूं और इनके साथ ही रहा करूं। उसे पूरा दिन बगीचे में तितलियों के पीछे-पीछे घुमने में ही निकाल दिया। सुबह से एक भी बार न तो किसी फूल पर जाकर बैठकर रस पिया और ना ही कुछ खाया। वह सारा दिन भुखी प्यासी उन तितलियों के साथ इधर-उधर घुमती रही। शाम को जब घर जाने का टाईम हो गया, तो उसे भूख का ऐहसास हुआ। फिर उसने सोचा आज सब के साथ घर लौट जाती हूं, मुझे रस खाने को मिल ही जाएगा। तितलियों के साथ कल से रह लूंगी। जब वह घर पहुंची, तो सारी मधुमक्खियों ने रस रखकर उसके साथ रस खाया। अगली सुबह सारी मधुमक्खियां फिर से रस की तलाश में निकल गईं लेकिन आज वे सभी कहीं और रस की तलाश में जा रही थीं। मगर ये आलसी मधुमक्खी कल वाली जगह पर अकेली ही चली गई और तितलियों के साथ खेलने लगी।

अचानक जोरो की वर्षा होने लगी। सारी तितलियां फूल की निचे छीप गए। मधुमक्खी भी उनको देखकर फूल के निचे छीप गई। मगर उसने देखा थोड़ी देर में तितलियां वहां से चली गईं। मधुमक्खी को अपने दोस्तों की याद आने लगी की वर्षा के पहले ही सब लोग इक्का घर वापस चले जाते थे। मधुमक्खी यहां बिल्कुल ही अकेला रह गया। उसे अब अपने लोगों की याद आने लगी। उसे अपने गर्म घर की भी याद आ रही थीं। क्योंकि अब मधुमक्खी को ठण्ड भी लगने लगी। फूल में जब पानी का वजन बढ़ा तो फूल टूट कर निचे जमीन पर गिरने लगा। मधुमक्खी को अब छीपने की कोई जगह समझ नहीं आई, तो वह वर्षा में ही घर जाने लगा। मधुमक्खी रोते-रोते अपने घर अपने दोस्तों के पास वापस चली जा रही थी। और वो पूरा रास्ता यहीं सोच रही थी। कितना भी काम क्यों ना करना पड़े। अब मैं अपने घर को छोड़ कर कभी नहीं जाऊंगी।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है। खुशी हो या कितनी भी मुश्किलें क्यों ना हो, हमें अपने परिवार के साथ ही रहना चाहिए। अकेले कहीं भी नहीं जाना चाहिए। नये दोस्त बनाना ठीक है मगर नये दोस्त बनाकर पुराने दोस्तों को छोड़ देना ऐसा सोचना गलत है।

## मैं बोझ नहीं हूँ



शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा,  
चलते चलते थक गई कंधे पे बिठा लो न पापा,  
अंधरे से डर लगता है सीने से लगा लो न पापा।

मम्मी तो सो गई।  
आप ही थपकी देकर सुलादो न पापा।

स्कूल तो पूरी हो गई,  
अब कॉलेज जाने दो न पापा।

पाल पोस कर बड़ा किया,  
अब जुदा तो मत करो न पापा।

अब डोली में बिठा ही दिया तो,  
आँसू तो मत बहाओ न पापा।

आपकी मुस्कराहट अच्छी है,  
एक बार मुस्कराओ न पापा।

आप ने मेरी हर बात मानी,  
एक बात और मान जाओ न पापा।

इस धरती पर बोझ नहीं हूँ मैं,  
दुनिया को समझाओ न पापा ।।

(अनामिका श्रीवास्तव)  
बुलियन लेखाकार

चलना हमारा काम है



ज़िन्दगी इक दौड़ है, रुकना मना है,  
ज़िन्दगी इक होड़ है, थकना मना है।  
चल चला चल ऐ पथिक चलना तुझे अविराम है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

मुश्किलें आती हैं, आँ,  
गरजे बादल, घनघोर घटाँ।  
पथ कठिन है याद रख, इक पल भी ना आराम है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

लक्ष्य का बस ध्यान हो,  
हर इक क्षण इक अनुसंधान हो।  
जीत हो एकल विकल्प, जीवन महा संग्राम है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

स्वर्ण सा तन को तपा,  
तू राह अपनी खुद बना।  
यह कर्मभूमि है पथिक, जो माँगती बलिदान है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

खुद पे जब विश्वास हो,  
मंज़िल पाने की प्यास हो।  
कर्मठ व्यक्ति के लिए, क्या सुबह क्या शाम है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

तोड़ दे सब बंध आज,  
धारा बहे प्रचंड आज।  
जो सह गया इस वेग को, होता उसी का नाम है,  
चलना हमारा काम है, चलना तुम्हारा काम है ।

(लालता प्रसाद)  
तकनीशियन

## कथा - सच्चा धन



एक थे राजा। उन्हें पशु पक्षियों से बहुत प्यार था। वे पशु पक्षियों से मिलने के लिए वन में जाते थे। हमेशा की तरह एक दिन राजा पशु-पक्षियों को देखने वन में गए। अचानक आसमान में बादल छा गए और तेज-तेज बारिश होने लगी। बारिश होने के कारण उन्हें ठीक से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। राजा रास्ता भटक गए। रास्ता ढूंढते-ढूंढते किसी तरह राजा जंगल के किनारे पहुंच ही गए। भूख-प्यास और थकान से बेचैन राजा एक बड़े से पेड़ के नीचे बैठ गए। तभी राजा को उधर से आते हुए तीन बालक दिखाई दिए। राजा ने उन्हें प्यार से अपने पास बुलाया। तीनों बालक हंसते हुए राजा के पास आ गए। तब राजा बोला बच्चों क्या मुझे थोड़ा भोजन और पानी मिल सकता है। बालक बोले, पास में ही हमारा घर है। हम अभी जाकर आपके लिए भोजन और पानी लेकर आते हैं। आप बस यहां इंतजार कीजिए। तीनों बालक दौड़कर गए और राजा के लिए भोजन और पानी ले आए।

राजा बालकों के व्यवहार से बहुत खुश हुए। वे बोले, प्यार बच्चों, तुमने मेरी भूख और प्यास मिटाई है। मैं तुम तीनों बालकों को इनाम के रूप में कुछ देना चाहता हूँ। बताओ तुम बालकों को क्या चाहिए। थोड़ी देर सोचने के बाद एक बालक बोला, महाराज, क्या आप मुझे एक बड़ा सा बंगला और गाड़ी दे सकते हैं। राजा बोले हां-हां क्यों नहीं। अगर तुम्हें ये ही चाहिए जरूर मिलेगा। अब तो बालक फूले न समाया। दूसरा बालक भी उछलते हुए बोला, मैं बहुत गरीब हूँ। मुझे धन चाहिए। जिससे मैं भी अच्छा अच्छा खा व अच्छा-अच्छा पहन सकूँ और खूब मस्ती करूँ। राजा मुस्कुराकर बोले, ठीक है बेटा, मैं तुम्हें बहुत सारा धन दूंगा। यह सुनकर दूसरा बालक अत्यंत ही प्रसन्न हो गया।

भला तीसरा बालक क्यों चुप रहता। वह भी बोला, महाराज कोई मेरा सपना पूरा नहीं करता। मुस्कराते हुए राजा ने बोला क्यों, तुम्हारा ऐसा क्या सपना है। तुम्हें भी धन-दौलत चाहिए। नहीं महाराज। मुझे धन-दौलत नहीं चाहिए। मेरा सपना है कि मैं पढ़-लिखकर विद्वान बनूँ। क्या आप मेरे लिए कुछ कर सकते हैं। तीसरे बालक की बात सुनकर राजा बहुत खुश हुए। राजा ने उसके पढ़ने-लिखने की उचित व्यवस्था करवा दी। वह मेहनती बालक था। वह दिन-रात लगन से पढ़ता और कक्षा में पहला स्थान प्राप्त करता। इस तरह समय बीतता गया। वह पढ़-लिखकर विद्वान बन गया। राजा ने उसे अपने राज्य का मंत्री बना दिया।

बुद्धिमान होने के कारण सभी लोग उसका आदर-सम्मान करने लगे। उधर जिस बालक ने राजा से बंगला और गाड़ी मांगी थी। अचानक बाढ़ आने से उसका सब कुछ पानी में बह गया। दूसरा बालक भी धन मिलने के बाद कोई काम नहीं करता था। बस दिनभर फिजूल खर्च करके धन को उड़ाता और मौज-मस्ती करता था। लेकिन रखा धन भला कब तक चलता। एक समय आया कि उसका सारा धन समाप्त हो गया। वह फिर से गरीब हो गया। दोनों बालक उदास होकर अपने मित्र यानि मंत्री से मिलने राजा के दरबार में गए। वे दुखी होकर अपने मित्र से बोले, हमने राजा से इनाम मांगने में बहुत बड़ी भूल की। हमारा धन, बंगला, गाड़ी सब कुछ खत्म हो गया। हमारे पास अब कुछ नहीं बचा है।

मित्र ने समझाते हुए कहा, किसी के पास धन-दौलत हमेशा नहीं रहता। किसी के पास अगर कुछ रहता है तो वह शिक्षा है। धन से नहीं बल्कि शिक्षा से ही मनुष्य धनवान बनते हैं। दोनों बालकों को अपनी गलती पर बहुत पछतावा हुआ। उन्होंने तय किया कि हम भी मेहनत और लगन से पढ़ाई करेंगे और अपने जीवन को सुखी बनाएंगे।

## आधुनिक सत्य



मियां-बीबी दोनों मिल खूब कमाते हैं,  
तीस लाख का पैकेज दोनों ही पाते हैं।  
सुबह आठ बजे नौकरियों पर चले जाते हैं,  
रात ग्यारह तक ही वापिस आते हैं।  
अपने परिवारिक रिश्तों से कतराते हैं,  
अकेले रह कर वह कैरियर बनाते हैं।  
कोई कुछ मांग न ले, वो मुंह छुपाते हैं,  
भीड़ में रहकर भी अकेले रह जाते हैं।  
मोटे वेतन की नौकरी छोड़ नहीं पाते हैं,  
अपने नन्हे-मुन्ने को पाल नहीं पाते हैं।  
फुल टाइम की मेड ऐजेंसी से लाते हैं,  
उसी के जिम्मे वो बच्चा छोड़ जाते हैं।  
परिवार को उनका बच्चा नहीं जानता है,  
केवल आया'आंटी' को ही पहचानता है।  
दादा-दादी, नाना-नानी कौन होते हैं?  
अनजान है सबसे, किसी की न मानता है।  
आया ही नहलाती है आया ही खिलाती है,  
टिफिन भी रोज़ रोज़ आया ही बनाती है।  
यूनिफार्म पहना के स्कूल कैब में बिठाती है,  
छुट्टी के बाद कैब से आया ही घर लाती है।  
नींद जब आती है तो आया ही सुलाती है,  
जैसी भी उसको आती है लोरी नहीं सुनाती है।  
उसे सुलाने में अक्सर वो भी सो जाती है,  
कभी जब मचलता है, तो टीवी दिखाती है।  
जो टीचर मैम बताती है वही वो समझाता है,  
देसी खाना छोड़ कर पिज्जा बर्गर खाता है।  
वीक एन्ड पर मॉल में पिकनिक मनाता है,  
संडे की छुट्टी मौम-डैड के संग बिताता है।  
वक्त नहीं रुकता है तेजी से गुजर जाता है,  
वह स्कूल से निकल के कालेज में आता है।  
कान्वेन्ट में पढ़ने पर इंडिया कहाँ भाता है,  
आगे पढाई करने वह विदेश चला जाता है।

वहाँ नये दोस्त बनते हैं उनमें रम जाता है,  
मां-बाप के पैसों से ही खर्चा चलाता है।  
धीरे-धीरे वहीं की संस्कृति में रंग जाता है,  
मौम डैड से रिश्ता पैसों का रह जाता है।  
कुछ दिन में उसे काम वहीं मिल जाता है,  
जीवन साथी शीघ्र ढूँढ वहीं बस जाता है।  
माँ बाप ने जो देखा ख्वाब वो टूट जाता है,  
बेटे के दिमाग में भी कैरियर रह जाता है।  
बुढ़ापे में माँ-बाप अकेले रह जाते हैं,  
जिनकी अनदेखी की, उनसे आँखें चुराते हैं।  
क्यों इतना कमाया, ये सोच के पछताते हैं,  
घुट घुट कर जीते हैं, खुद से भी शरमाते हैं।  
कमर भी झुक जाती, कान नहीं सुन पाते हैं,  
वृद्धाश्रम में दाखिल हो, जिंदा ही मर जाते हैं।

सोचना की बच्चे अपने लिए पैदा कर रहे हो या  
विदेश की सेवा के लिए।

फुलटाइम 'सेविका' एजेंसी से लाता है,  
उसी के हवाले बूढ़े माँ-बाप छोड़ उड़ जाता है।  
जो उसने बचपन से देखा वही वो दोहराता है  
अपनी जिम्मेदारी से मुहँ छुपाता है।  
बेटा एडिलेड में, बेटा है न्यूयार्क।  
ब्राइट बच्चों के लिए, हुआ बुढ़ापा डार्क।  
बेटा डालर में बंधा, सात समन्दर पार।  
चिता जलाने बाप की, गए पड़ोसी चार।  
ऑन लाईन पर हो गए, सारे लाड़ दुलार।  
दुनियां छोटी हो गई, रिश्ते हैं बीमार।  
बूढ़ा-बूढ़ी आँख में, भरते खारा नीर।  
हरिद्वार के घाट की, सिडनी में तकदीर।  
तेरे डालर से भला, मेरा इक कलदार।  
रूखी-सूखी में सुखी, अपना घर संसार।

## तेनाली की मुनादी



एक बार की बात है -राजा कृष्णदेव राय जनहित के विषय पर गहन विचार-विमर्श कर रहे थे। राजपुरोहित ने सुझाव दिया- 'अच्छा हो महाराज अगर जनहित के इन निर्णयों की जानकारी सीधे जनता तक पहुंचाई जाए।' महाराज मतलब यह है कि राज-सभा में लिए गए निर्णयों की मुनादी कार्रवाई की जाए। मगर यह कार्य करेगा कौन - राजा बोले।



'तेनालीराम। वो सारी चर्चा को और उसका विस्तृत विवरण जनता में पहुँचाएगा।' प्रधानमंत्री ने कहा। महाराजा ने तेनाली को जनता को राज-निर्णयों से अवगत करने की जिम्मेदारी सौंप दी। तेनाली समझ गया कि उसे राजपुरोहित व प्रधानमंत्री ने जान-बूझकर फंसाया है।

उसने अगले ही दिन राज-सभा की सारी कार्यवाही की मुनादी करवाने के लिए नियुक्त कर्मचारी से कहा- महाराज कृष्णदेव के आदेश पर तेनालीराम ने आपको सूचित किया है - महाराज चाहते हैं कि प्रजा के साथ पूरा न्याय हो और अपराधी को सजा मिले। इस बारे में विचार-विमर्श हुआ। महाराजा नई व्यवस्था चाहते हैं। साथ ही पुरानी व्यवस्था कि अच्छी बातें भी लागू करना चाहते हैं। इस बात पर राजपुरोहित जी से जानना चाहा तो वे ऊँघ रहे थे। इस पर महाराज ने उन्हें खूब फटकार लगाई और नमक मिला हुआ गरम पानी पिलवाया। दरबार में सेनापति कि गैरहाजिरी में सीमाओं पर सुरक्षा की चर्चा भी न हो सकी। इसी प्रकार प्रत्येक सप्ताह मुनादी होने लगी।

तेनाली के नाम का जिक्र तो अवश्य होता, जिससे जनता को लगता जनहित के निर्णय तेनाली की सलाह पर लिए जाते हैं जबकि राजपुरोहित, प्रधानमंत्री और सेनापति की खिंचाई होती है। जब यह सूचना तीनों तक पहुँची तो वे बड़े चिंतित हुए। मौका देखकर राजपुरोहित ने महाराजा से कहा- महाराज यह सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं कि मुनादी करवाकर राजकार्यों से जनता को अवगत कराया जाए।

अतः मुनादी कि कार्रवाई बंद कर दी जानी चाहिए। तभी तेनाली बोला- राजपुरोहित जी, जब चारो ओर आपकी पोल के ढोल बज गए तब आपको होश आया। राजा यह सुनकर ठाहका लगाकर हँस पड़े।

(रवींद्र कुमार)  
वरिष्ठ तकनीशियन

## जीवन सत्य है "संघर्ष"



सबका जीवन बीत रहा है, मुश्किलों से लड़ने में,  
अंतर साहस रीत रहा है, कर्म-पथ पर चलने में।

संघर्ष ही जीवन यथार्थ है, बाकी सब हैं भ्रम प्यारे,  
मन को कर पत्थर सा कठोर, इसी से चलता जीवन क्रम प्यारे।

जीवन है उस मनुष्य में जो कर्मठता का पर्याय हो,  
पेट पाल कर अपने जन का नित करता स्वाध्याय हो।

जीवन है उस माँ में, जो शिशु पर अपना सर्वस्व लुटाती है,  
असह्य वेदना सहकर जो मुस्काती है।

जीवन है उस नदिया में, जो सबकी प्यास मिटाती है,  
अपने पावन जल से, सभी जीवों को तृप्त कर जाती है।

जीवन है उस मनुष्य में, जो न भाग्य भरोसे रहता है,  
जिसके अंतर का साहस विधि को भी चुनौती देता है।

बिना संघर्ष किये जो मिलता वह तो भीख समान है,  
परिश्रम करके जो हासिल हो उसमें ही सम्मान है।

संघर्ष ही जीवन सत्य है इसमें कोई दो राय नहीं,  
जब मन में हो इच्छा प्रबल फिर पथ की कोई परवाह नहीं।

जो मंज़िल पाना चाहता है तो शूलों से घबराना कैसा ?  
शारीरिक सुखों की खातिर पथ बाधाओं से डर जाना कैसा ?

संघर्ष की ज्वाला में जलकर तू कंचन बन जाएगा,  
अंतर शक्ति के बल पर स्वर्णिम भविष्य ले जाएगा।

कर्म-पथ ही एकल विकल्प है, अपनी मंज़िल तक जाने का,  
संघर्ष ही एकल विकल्प है, अनंत कीर्ति को पाने का।

(नीरज झा)  
कार्यालय सहायक

शायरी संकलन



1. वाह री किस्मत, आज वो भी कहते हैं बुरा।  
हम बुरे सबसे बने जिनके लिए।। "

शायर:-अमीर मीनाई।

2. आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं  
सामान सौ बरस का है, पल की खबर नहीं।

शायर:-हैरत इलाहाबादी

3. कुछ ना कहने से भी छिन जाता है एजाज- ए- सुखन।  
जुल्म सहने से भी, जालिम की मदद होती है।

शायर:- मुज्जफ़्फ़र वारसी

4. सच है कि नहीं मरता कोई किसी की जुदाई में।  
खुदा किसी को किसी से मगर जुदा ना करे।

शायर:- कतील शिफाई

5. खुदा से मांग जो कुछ मांगना है ऐ 'अकबर'।  
यही वो दर है कि जिल्लत नहीं सवाल के बाद।।

शायर:- अकबर इलाहाबादी

6. बड़े लोगों से मिलने में, हमेशा फासला रखना।  
जहाँ दरिया समन्दर में मिला, दरिया नहीं रहता॥

शायर:- -डा . बशीर बद्र

7. "ऐब" भी हैं मुझमें और "खूबिया" भी बहुत,  
ढूढ़ने वाले बता, कि तुझे क्या चाहिए॥

शायर:- गुलजार

8. कभी-कभी की मुलाकात ही अच्छी है अमीर।  
कद्र खो देता है, हर रोज का आना-जाना।।

शायर:- अमीर मीनाई

9. रहता है इबादत में हमें मौत का खटका।  
हम याद ए खुदा करते हैं, कर ले ना खुदा याद।।

शायर :- अकबर इलाहाबादी

## सकारात्मक सोच की ताकत



सोच एवं विचार ही व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। विचारों की ताकत को किसी भी ताकत से दबाया नहीं जा सकता। हमारी सोच हमारे मस्तिष्क पर असर डालती है। यदि सोच सकारात्मक हो तो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता एवं सुखी जीवन को पाया जा सकता है, जो लोग हमेशा नकारात्मक विचारों से दूर रहकर सकारात्मक सोच रखते हैं, वे मुश्किलों में भी हार मान कर हताश होने की बजाय अपनी सम्पूर्ण ताकत जुटाकर प्रयास करने में लग जाते हैं। इस तरह सकारात्मक सोच न सिर्फ व्यक्ति को बाधाओं से पार पहुंचाती है बल्कि वह उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाने में सहायक होती है। संसार में जिन-जिन ने अच्छे कर्म किये, कोई अद्भुत करिश्मा किया, उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करने वाली ताकत सकारात्मक सोच ही थी। यह मानवीय स्वभाव की विशेषता है कि जैसी हमारी सोच होती है, उसी के अनुरूप हम विचार करते हैं।

अमुक व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध में हमारे विचार ऐसे ही होंगे जैसी हमारी उसके प्रति सोच होगी। हमारे विचार ही कृत्य में बदलते हैं। इस लिहाज से सोच विचार और कर्म का यह चक्र आपस में इस तरह जुड़ा है कि चाहकर भी व्यक्ति अपनी सोच या विचार से हटकर कोई कदम नहीं उठा सकता। दुनिया का कोई ऐसा कार्य नहीं जो आप नहीं कर सकते हैं यानी जिसे आप करने का दृढ़ निश्चय कर लेते हो उसे आप कर सकते हैं। इस तरह की सकारात्मक सोच से आप असम्भव लगने वाले कृत्य भी कर लेते हैं। वही मुझमें यहकमी हैं, मेरे पास साधन सुविधाएँ नहीं हैं, मेरी पृष्ठभूमि निम्न स्तरीय है अथवा मेरी क्षमता इतनी ही है, मैं कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता, इस तरह की नकारात्मक सोच के सहारे किसी सरल टास्क को भी पूर्ण नहीं किया जा सकता। व्यक्ति को आंतरिक प्रेरणा उसकी सकारात्मक सोच से ही मिलती है। सकारात्मक विचार रखने वाला व्यक्ति सुख सम्पद्धि व नित्य नवजीवन के अनुभव प्राप्त करता है। यदि आपने कुछ पाने या बनने का सपना देखा है, तो यह सर्वविदित सत्य है कि जब तक आप उस दिशा में 100 फीसदी सकारात्मक सोच के साथ कदम नहीं उठाएंगे, आप सफल नहीं हो पाएंगे। सकारात्मक सोच के विकास के लिए यह जरूरी है कि आप नकारात्मक लोगों से दूर रहकर ऐसे लोगों की संगति में रहें, जो हमेशा सकारात्मक सोच रखते हैं क्योंकि हम वही करते हैं जैसा हम सुनते हैं, देखते हैं व जिसके के साथ रहते हैं। उसी के अनुरूप हमारे विचारों का जन्म होता है। सकारात्मक सोच के लिए जरूरी है। हम किसी घटना को जीवन का परिणाम न समझकर उसे जीवन की एक घटना ही माने उदाहरण के लिए व्यापार में घाटा या परीक्षा में फेल होने पर हम इसे अपने जीवन का फल मान लेते हैं तथा अपनी किस्मत व भगवान को कोसने लग जाते हैं। ऐसा करने से हमारे चारों ओर एक घोर निराशावादी एवं नकारात्मक सोच का वातावरण तैयार हो जाता है, ऐसी परिस्थिति में लोग कई बार गलत कदम उठा लेते हैं और वाकई वह एक छोटी सी घटना उसके जीवन का परिणाम बन जाती है। इसलिए जीवन को विस्तृत परिपेक्ष्य में देखें, नित्य घटित होने वाली छोटी-मोटी घटनाओं को उसका अंश ही माने न की जीवन परिणाम तथा पुनः पूरे जोश के साथ नई दिशा में अथवा उस उसी क्षेत्र में पूर्ण सकारात्मक सोच के साथ जुट जाएं तो आपको वह सब कुछ पाने से कोई नहीं रोक सकता, जिन्हें आपने अपने जहन में सपने के रूप में बसाया है। आज से ही अपने जीवन में कुछ बड़ा करने के लिए सकारात्मक सोच को अपने जीवन का मूलमंत्र बनाएं, मात्र सोच बदलने से पाएंगे कि आपके लिए हर तरफ राह खुली है। बस आपको अपने मस्तिष्क में नकारात्मक सोच को आने नहीं देना है, तभी हम जीवन में सोच की प्रबलता का फायदा उठा सकेंगे।

# गतिविधियाँ

## क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 27 नवंबर, 2021 को माननीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में एक राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें कार्यालय को वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा हिंदी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



## अखिल भारत राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 13-14 नवंबर, 2021 को माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें उन्होंने स्व-भाषा के सपने को सकार करने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता प्रकट तथा हिंदी को लोकभाषा का दर्जा दिलाने के प्रति संकल्पशील रहने का आह्वान किया। कार्यालय की ओर से इस राजभाषा सम्मेलन में श्री नरेश कुमार, उप प्रबंधक (रा.भा.), श्री आशीष शर्मा, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक और श्री अमित कुमार जोशी, कनिष्ठ कार्यालय सहायक ने भागीदारी सुनिश्चित की।



# गतिविधियाँ

## हिंदी दिवस एवं पखवाड़

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संबंध में हिंदी दिवस, 2021 समारोह एवं इसके उपलक्ष्य में दिनांक 01.09.2021 से 14.09.2021 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस आयोजन के दौरान राजभाषा के प्रयोग के संबंध में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन किया गया।



## संयुक्त सचिव का आगमन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 03.07.2021 को सुश्री मनीषा सिन्हा, संयुक्त सचिव, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार का आगमन हुआ। इस दौरान निगम मुख्यालय से वरिष्ठ प्रबंधन सहित टकसाल के अन्य अधिकारीगण मौजूद थे। सुश्री मनीषा सिन्हा ने सर्वप्रथम टकसाल के उत्पादन क्षेत्र तथा संबद्ध विभागों का दौरा किया। इस अवसर पर इकाई में वृक्षारोपण भी किया गया।



## स्वतंत्र निदेशकों का आगमन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में दिनांक 03.02.2022 को कंपनी के निदेशक मंडल के स्वतंत्र निदेशक महोदय श्री रामकुमार चिलुकुरी व श्री अजय कुमार जसवंत लाल चौकसी जी का आगमन हुआ। उनके साथ श्री प्रवीण कुमार पांडे, मुख्य महाप्रबंधक (तकनीकी प्रचालन) का भी आगमन हुआ। सर्वप्रथम उन्होंने टकसाल परिसर के उत्पादन क्षेत्र का दौरा किया तथा उत्पादन क्षेत्र संबंधित गहन जानकारीयां ली तथा परिसर में वृक्षारोपण भी किया। उनके दौरे की कुछ तस्वीरें:



## मुख्य सतर्कता अधिकारी का आगमन

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में कंपनी के नवागंतुक मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री विनय कुमार सिंह जी का दिनांक 08.09.2021 को आगमन हुआ। कंपनी में नियुक्ति के उपरांत अपने इस पहले दौरे में उन्होंने सर्वप्रथम टकसाल परिसर के उत्पाद क्षेत्र का दौरा किया तथा उत्पादन क्षेत्र संबंधित गहन जानकारीयां ली तथा परिसर में वृक्षारोपण भी किया। उनके दौरे की कुछ तस्वीरें:



# गतिविधियाँ

## श्रम कानून जागरूकता कार्यक्रम

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में श्रमिक कानून जागरूकता कार्यक्रम दिनांक 16.12.2021 को 'श्रम कानूनों व संगठन के अधिकारों' के विषय में व्याख्यान के लिए श्रमायुक्त श्री प्रमोद कुमार विदुआ जी को आमंत्रित किया गया था।



## गणतंत्र दिवस समारोह

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में 73वाँ गणतंत्र दिवस समारोह



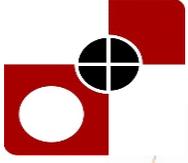
## महिला दिवस कार्यक्रम

भारत सरकार टकसाल, नोएडा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिनांक 08.03.2022 को आयोजित शानदार कार्यक्रम की कुछ तस्वीरें।



# आजादी के अमृत महोत्सव काल में देश की स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां





मुद्रावाणी

75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव



**भारत सरकार टकसाल, नोएडा**

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)  
डी-2, सेक्टर-1, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आईएसओ: 9001:2015, 14001:2015 (प्रमाणित), 45001:2018

Website: [www.igmnoida.spmcil.com](http://www.igmnoida.spmcil.com)

E-mail [I.D.-igm.noida@spmcil.com](mailto:I.D.-igm.noida@spmcil.com)